हरिभूमि
सिरसा-फतेहाबाद भूमि
रोहतक, रविवार, 12 अक्टूबर, 2025

12 गोशाला की दुर्दशा : 300 से अधिक गोवंश भुखमरी के कगार पर

12 डूल्ट में महिलाओं को मासिक धर्म स्वच्छता के प्रति किया जागरूक

खबर संक्षेप

पराली प्रबंधन सप्लाई चेन स्थापना के चयन का ड्रा कल

सिरसा। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत वर्ष 2025-26 के लिए धान फसल अवशेष आपूर्ति श्रृंखला की स्थापना हेतु आवेदकों का चयन 13 अक्तूबर को सायं 4 बजे ड्रा के माध्यम से किया जाएगा। सहायक कृषि अभियंता विजय कुमार ने बताया कि विभागीय पोर्टल पर कुल 156 आवेदन प्राप्त हुए थे। दस्तावेजों की जांच के बाद 81 आवेदक पात्र पाए गए हैं। मुख्यालय द्वारा जिले को कुल 5 सप्लाई चेन स्थापित करने का लक्ष्य दिया गया है, जिसके लिए यह ड्रा आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे अधिक से अधिक संख्या में ड्रा में भाग लें।

घर में चोरी करने के आरोपी को दबोचा

सिरसा। पुलिस ने घर में चोरी मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान सिरसा निवासी अनमोल के रूप में हुई है। प्रबंधक थाना सदर सिरसा सुखदेव सिंह ने बताया कि शिकायतकर्ता सोनी कुमारी निवासी इंद्रा विकास कॉलोनी शाहपुर बेगू, सिरसा ने दिनांक बीती 10 जुलाई को थाना सदर सिरसा में शिकायत दी थी कि वह लगभग 15 दिन पहले अपने गांव बिहार गई हुई थी।

अवैध पिस्तौल सप्लायर किया गिरफ्तार

सिरसा। पुलिस ने अवैध पिस्तौल सप्लाई करने के आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान गांव गदराना निवासी गुरदीप के रूप में हुई है। पुलिस प्रबंधक ने बताया कि उक्त आरोपी बीती 12 सितंबर को शस्त्र अधिनियम के आरोप में वांछित था। आरोपी गुरदीप ने पूछताछ के दौरान स्वीकार किया कि उसने एक 32 बोर पिस्तौल आनंदगढ़ निवासी आरोपी विकास को बेचा था। गहन पूछताछ करने उपरान्त आरोपी को अदालत में पेश करकेन्यायिक हिरासत में भेजा गया है।

होम स्टे ट्रेनिंग के लिए 17 अक्टूबर तक करें आवेदन

फतेहाबाद। हरियाणा सरकार द्वारा घोषणा के अनुसार हरियाणा राज्य के सभी जिलों से 15-29 वर्ष के युवाओं को नवंबर 2025 से मार्च 2026 तक 154 घंटों की होम स्टे ट्रेनिंग होटल प्रबंधन संस्थान कुरूक्षेत्र में करवाई जानी है। आवेदन के इच्छुक प्रतिभागी राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, भोडिया खेड़ा से 17 अक्टूबर तक आवेदन फार्म प्राप्त कर आवेदन कर सकते हैं।

दीन दयाल लाडो लक्ष्मी योजना बाबूओं की मिसमैनेजमेंट से महिलाएं परेशान

पुराना डोमिसाइल मान्य नहीं, नया बनवाने के लिए खाने पड़ रहे धक्के

नगर परिषद के बार बार चक्कर काटने को मजबूर हो रही बेटियां

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

भले ही सरकार ने दीन दयाल लाडो लक्ष्मी योजना लागू कर महिलाओं को 2100 रुपये प्रतिमाह देने को लेकर गंभीर हो लेकिन फतेहाबाद के सरकारी बाबू सरकार की इस योजना को पलीता लगाते में कोई कसर नहीं छोड़ रहे। इस योजना के तहत पात्रों को लाभ लेने के लिए नया डोमिसाइल बनवाना जरूरी है। ऐसे में योजना के लागू होते ही बड़ी संख्या में लाभार्थी महिलाएं और युवतियां डोमिसाइल बनवाने के लिए नगरपरिषद चक्कर लगा रही हैं लेकिन नगरपरिषद में अधिकारियों की मिसमैनेजमेंट के चलते महिलाएं परेशान हैं। सरकारी बाबूओं की दादागिरी से परेशान अनेक महिलाओं का कहना है कि यदि यही हाल रहा तो वह सरकार की योजना का लाभ लेने से वंचित रह जाएंगी। इस समय नगर परिषद में रोजाना तीन सौ से अधिक पात्र डोमिसाइल बनवाने के लिए डॉक्यूमेंट वेरिफाई करवाने पहुंच रही हैं। कई घंटे तक लाइन में लगकर अपनी बारी का इंतजार करना पड़ रहा है। नए हरियाणा डोमिसाइल बनवाने का मुख्य कारण है कि पुराने डोमिसाइल पोर्टल वेलिड नहीं कर रहा है। ऐसे में इस योजना का लाभ उठाने के लिए लोगों को नए डोमिसाइल बनवाने पड़ रहे हैं। आवेदन करने की कतार में काफी लोगों ने सरकार से यह मांग की है कि फिलहाल पुराने हरियाणा डोमिसाइल मान्य किए जाएं, ताकि वे इस योजना के लिए आसानी से आवेदन कर सकें।

रोजाना तीन सौ से अधिक पात्र डोमिसाइल बनवाने के लिए डॉक्यूमेंट वेरिफाई करवाने पहुंच रही

फतेहाबाद। नगरपरिषद कार्यालय। *फोटो : हरिभूमि*

एप डाउनलोड करने को बारकोड चस्पाया

सरकार की ओर से इस योजना के आवेदन के लिए लाडो लक्ष्मी योजना एप जारी की गई है। गूगल प्ले स्टोर से यह एप डाउनलोड की जा सकती है। प्रशासन ने इस एप को डाउनलोड करने के लिए लघु सचिवालय परिसर में बारकोड के फोटो चस्पा कर रखे हैं, ताकि लोग ओरिजिनल एप डाउनलोड कर सकें। लघु सचिवालय में आने वाले काफी लोग इस बारकोड का लाभ उठा रहे हैं।

योजना के तहत 6 चरण में होगी आवेदन प्रक्रिया पूरी

- अविवाहिता व विवाहिता के लिए अलग-अलग प्रक्रिया है।

लाडो लक्ष्मी एप पर आवेदन करने के लिए पर्सनल मोबाइल नंबर से रजिस्ट्रेशन करना होता है। इसके बाद 6 चरण में आवेदन प्रक्रिया पार करनी पड़ेगी। अविवाहिता व विवाहिता के लिए अलग-अलग प्रक्रिया है। विवाहित महिला के लिए भी 6 चरण हैं। पहले चरण में आवेदिकाओं को खुद का विवरण देना है। दूसरे चरण में आवास का विवरण देना है। तीसरे चरण में परिवार के सभी सदस्यों का विवरण देना है। चौथे चरण में परिवार की आय का विवरण देना है। पांचवें चरण में बैंक खाते का विवरण देना है व छठे चरण में लाइव फोटो देना है। लोगों ने बताया कि लाइव फोटो में विवाहिताओं को परेशानी आ रही है। जिसमें उनको मुस्कुराने, इधर उधर देखने व हिलने की गतिविधि करने को कहा जाता है। अगर ये गतिविधि नहीं की गई तो लाइव फोटो मान्य नहीं होता।

नगर परिषद के कमरा नंबर 9 में वेरिफाई किए जा रहे डॉक्यूमेंट

परिषद कार्यालय में ईओ के ऑफिस के सामने कमरा नंबर-9 में हरियाणा डोमिसाइल के डॉक्यूमेंट वेरीफाई किए जा रहे हैं। सबसे ज्यादा परेशानी विवाहित महिलाओं को हो रही है। विवाहिताओं को अपने सास, ससुर सहित अपने माता-पिता के कुछ डॉक्यूमेंट व डिटेल अपडेट करनी पड़ रही है। आवेदन करने वाले लोगों ने बताया कि विवाहित महिला को केवल अपने व अपने पति के डॉक्यूमेंट तक ही सीमित कर देना चाहिए। बड़ी बात है जिम्मेदार क्लर्क लोगो को खामखा चक्कर कटवा रही है। इसके अलावा यहां तैनात डी ग्रुप का एक कर्मचारी नगरपरिषद का मालिक समझे बैठा है। वह न केवल लोगों से दुव्यर्वहार करता देखा जा रहा है वहीं उसके रौब झाड़ने से महिलाओं में भी काफी गुस्सा है।

फतेहाबाद। आईपीएस वाई पूरण कुमार की मौत पर संवेदना व्यक्त करते दलित अधिकार मंच के सदस्य। *फोटो : हरिभूमि*

आईपीएस सुसाइड केस

मामले की निष्पक्ष जांच व दोषियों पर हो कार्रवाई

- दलित अधिकार मंच हरियाणा ने आईपीएस अधिकारी वाई पूरण कुमार की संस्थागत हत्या जताया रोष

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

दलित अधिकार मंच हरियाणा ने आईपीएस अधिकारी वाई पूरण कुमार की संस्थागत हत्या पर गहरा रोष व्यक्त करते हुए पूरे मामले की निष्पक्ष जांच करने और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। दलित अधिकार मंच आईपीएस अधिकारी वाई पूरण कुमार की पत्नी आईएएस अमनीत पी कुमार और अन्य परिजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करती है। दलित अधिकार मंच के राज्य संयोजक रामकुमार बहबलपुरिया ने कहा कि आईपीएस अधिकारी वाई पूरण कुमार ने आत्महत्या नहीं की है बल्कि यह संस्थागत हत्या है। उन्होंने सुसाइड नोट में कई आईपीएस और आईएएस अधिकारियों पर गंभीर आरोप लगाए हैं जिन्होंने उनका उत्पीड़न किया। वे बार-बार आरोपित अधिकारियों की शिकायत करते रहे परंतु राज्य सरकार द्वारा कोई भी कार्रवाई नहीं की गई। यह बहुत शर्मनाक है कि सरकारी तंत्र में बड़े पद पर बैठे इस पुलिस अधिकारी को इस हद तक जातिगत भेदभाव, अपमान और उत्पीड़न झेलना पड़ा कि उन्होंने आत्मघाती कदम उठा लिया।

जातीय उत्पीड़न पर चिंता

बहबलपुरिया ने कहा कि एक तरफ शासक पार्टी विकास की डींगें हांकने में लगी हुई है दूसरी तरफ जाति व धर्म के नाम पर उत्पीडऩ के मामले बढ़ रहे हैं। सत्ता की छांव में जात-पात को मजबूत किया जा रहा है। पिछले दिनों चीफ जस्टिस पर जूता फेंकने की घटना इसी नफरती जहर का नतीजा है। दलित अधिकार मंच हरियाणा राज्य कमेटी मांग करती है कि एडीजीपी वाई पूरण कुमार के मामले की समयबद्ध निष्पक्ष जांच करते हुए सभी आरोपित दोषियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाए।

सहकारी विपणन समितियों की हड़ताल समाप्त

- रजिस्ट्रार सहकारी समितियां हरियाणा ने हैफेड प्रशासक मंडल द्वारा पारित प्रस्ताव किया निलंबित

हरिभूमि न्यूज ⏭सिरसा

सहकारी विपणन समितियों व कर्मचारियों की हड़ताल समाप्त हो गई है। दी हरियाणा कोऑपरेटिव मार्केटिंग सोसाइटी एम्पलाइज यूनियन के प्रदेश महामंत्री हनुमान ने बताया कि कर्मचारी यूनियन लंबे समय से समितियों को फसल खरीद पर मिलने वाले कमीशन की दर को बढ़ाने की मांग कर रही थी, किंतु हैफेड प्रबंधन ने मांग को पूरा करने की बजाय सहकारी विपणन समितियां को धान फसल के न्यूनतम समर्थन मूल्य पर वर्षों-वर्ष से मिल रहे कमीशन की दर 0.25 प्रति क्विंटल, जो कि 5.80 रूपये प्रति क्विंटल बनता है, उसे घटाकर मात्र 1.33 रुपए कर दिया, जिससे समितियों की कमीशन आय में लगभग 77 प्रतिशत की कमी हो गई, यही मुद्दा आंदोलन का मुख्य कारण बना।

सिरसा। हड़ताल समाप्त करते सिपणन समितियों के पदाधिकारी। *फोटो : हरिभूमि*

कर्मचारी हड़ताल का हुआ समाधान

इसके विरोध में कर्मचारी यूनियन दिनांक 1 अक्टूबर 2025 को हैफेड मुख्यालय पंचकूला पर प्रदर्शन कर प्रबंध निदेशक को नोटिस दिया था कि यदि 6 अक्टूबर 2025 तक मामले का समाधान नहीं हुआ तो कर्मचारी 7 अक्टूबर से हड़ताल शुरू कर देंगे। लगातार चार दिनों से चल रही हड़ताल के कारण समिति हितों तथा किसानों को होने वाली परेशानी को देखते हुए मुख्य मुद्दे के समाधान के लिए सहकार भारती आगे आई और उन्होंने यूनियन ओर सरकार से बातचीत कर मुख्य समस्या का समाधान करवाया।

बजरंग गर्ग के समर्थन में उतरे व्यापारी

- तोडफ़ोड़ करने वाले अधिकारियों पर कार्रवाई नहीं हुई तो आंदोलन होगा तेज : नारंग

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

हरियाणा प्रदेश व्यापार मंडल के अध्यक्ष बजरंग गर्ग द्वारा अधिकारियों के कॉलर पकडऩे और छित्तर परेड़ करने वाले ब्यान के बाद डीएमसी संजय बिश्नोई द्वारा उनके खिलाफ लिखे गए पत्र का मामला तूल पकडऩे लगा है। डीएमसी के लेटर के बाद फतेहाबाद व्यापार मंडल बजरंग दास गर्ग के समर्थन में उतर आया है। व्यापार मंडल प्रधान अशोक नारंग का कहना है कि एक अधिकारी अपने ऊपर कारवाई होते देखकर व्यापार मंडल के प्रांतीय अध्यक्ष बजरंग गर्ग पर झूठी कार्रवाई करने का दबाव बनाने में लगा हुआ है, जबकि हरियाणा ही नहीं पूरे देश का व्यापारी बजरंग गर्ग के साथ खड़ा है। व्यापार मंडल प्रधान अशोक नारंग ने कहा कि बजरंग गर्ग ने कहा था कि हम ईमानदार अधिकारियों के साथ हैं उनकी इज्जत करते हैं और भ्रष्ट अधिकारियों के पहले भी खिलाफ थे और हमेशा खिलाफ रहेंगे। भ्रष्ट अधिकारी को भ्रष्ट कहना गलत नहीं है। नारंग ने कहा कि जो अधिकारी बजरंग गर्ग पर कार्यवाही करने की बात कर रहा है, इसका मतलब साफ है कि वह बेईमान है। व्यापार मंडल व्यापारियों के हित में व्यापार मंडल के प्रांतीय अध्यक्ष बजरंग गर्ग के नेतृत्व में 40 सालों से लड़ाई लड़ रहा है और आगे भी भ्रष्ट अधिकारियों के खिलाफ लड़ता रहेगा। उन्होंने कहा कि एक तरफ दीपावली के बाद व्यापार मंडल के साथ बैठकर बात करने की बात की जा रही है, दूसरी तरफ व्यापार मंडल ने अतिक्रमण अभियान में तोडफ़ोड़ करने वाले अधिकारियों के खिलाफ जो मांग पत्र दिया था उस पर अभी तक किसी तरह का कोई संज्ञान नहीं लिया गया है। होना यह चाहिए था भ्रष्ट व दोषी अधिकारियों का तबादला या कारवाई की जाती।

बजरंग गर्ग व अशोक नारंग।

बाजार बंद, विरोध तेज

नारंग ने कहा कि नगर परिषद के अधिकारी ने बिना नोटिस दिए फतेहाबाद व टोहाना में दुकानदारों के शैड व सीढियां आदि तोड़ दिए। यहां तक की बिना बिजली विभाग के बिजली की तारे तोड़ कर बिजली काट दी। इससे बड़े जान माल का नुकसान भी हो सकता था। यह सब कार्यवाही अल सुबह चुपचाप तरीके से की गई, जबकि अधिकारी 11 बजे से पहले दफ्तरों में नहीं मिलते और कार्रवाई करते वक्त सुबह जल्दी उठकर कार्रवाई भी कर लेते हैं। इसके विरोध में टोहाना व फतेहाबाद में बाजार बंद किए गए व इन बेलगाम सरकारी अधिकारियों के पुतले भी फूंके गए लेकिन अभी तक सरकार द्वारा इन अधिकारियों पर कोई कार्रवाई न करने पर व्यापार मंडल में रोष व्याप्त है। व्यापार मंडल का कहना है कि सरकार जनता द्वारा चुनी जाती है। अब लगता है जनता से सरकार को कोई सरोकार नहीं है और इतना जन विरोध होने के बावजूद भी इन अधिकारियों का संरक्षण कर सरकार जन भावनाओं को ठेस पहुंचा रही है। अगर जल्दी इन पर कार्रवाई न की गई तो यह आंदोलन और भी तेज हो सकता है।

नुक्कड़ सभा से लोगों को किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

जिलेभर में नशा उन्मूलन के लिए चलाए जा रहे विशेष जागरूकता अभियान के अंतर्गत नशा मुक्ति टीम द्वारा गांव बाड़ा में एक नुक्कड़ सभा का आयोजन किया गया। इस दौरान ग्रामीणों को नशे के दुष्परिणामों और इसके समाज, परिवार तथा युवा पीढ़ी पर पडऩे वाले गहरे प्रभावों के बारे में जानकारी दी गई। टीम ने लोगों से नशे के खिलाफ एकजुट होकर जागरूकता फैलाने की अपील की। नशा मुक्ति टीम के प्रभारी एसआई सुंदर ने बताया कि अभियान के तहत गांव के मुख्य चौक पर नुक्कड़ सभा आयोजित की गई, जिसमें बड़ी संख्या में ग्रामीण, महिलाएं और युवा उपस्थित रहे। टीम ने नशे के दुष्प्रभावों पर चर्चा करते हुए बताया कि नशा न केवल व्यक्ति की सेहत को नष्ट करता है बल्कि उसके परिवार की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को भी कमजोर कर देता है। इस दौरान ग्रामीणों को नशे से दूर रहने, अपने बच्चों पर नजर रखने और नशा करने वालों को उपचार के लिए प्रेरित करने का संदेश दिया।

फतेहाबाद। गांव बाड़ा में ग्रामीणों को जागरूक करते एसआई सुंदर।

नशा छोड़ने के लिए संकल्प की आवश्यकता

नशा मुक्ति टीम प्रभारी एसआई सुंदर ने कहा कि नशा छोडऩा मुश्किल नहीं, बस संकल्प की आवश्यकता है। पुलिस का उद्देश्य केवल कार्रवाई करना नहीं, बल्कि समाज को नशे के इस अभिशाप से मुक्त कराना है। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसे अभियानों का मकसद युवाओं में जागरूकता फैलाकर उन्हें स्वस्थ और जिम्मेदार नागरिक बनाना है।

व्यवस्था भीड़ और जाम कम करने के लिए पुलिस ने विशेष प्लान लागू किया

फतेहाबाद मुख्य बाजार में दीपावली के दौरान ट्रैफिक और पार्किंग व्यवस्था बदल दी

थाना रोड और जवाहर चौक पार्किंग के बाहर बेरिकेट्स लगाए

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

त्यौहारों के नजदीक आते ही इन दिनों फतेहाबाद के मुख्य बाजार थाना रोड पर खरीददारी के लिए भीड़ उमड़ रही है, जिसके चलते जाम व वाहन पार्किंग को लेकर लोगों को परेशानी झेलनी पड़ रही है। इस समस्या को खत्म करने के लिए पुलिस ने जवाहर चौक और थाना रोड पार्किंग के बाहर बेरिकेट्स लगा दिए हैं। इससे यह होगा कि शिव चौक, डीएसपी रोड, तहसील चौक से आने वाले वाहन जवाहर चौक से थाना रोड पर प्रवेश नहीं कर पाएंगे जबकि फव्वारा से आने वाले वाहनों को मल्टीलेवल पार्किंग में ही जाना पड़ेगा। इसके अलावा थाना रोड पर बड़े वाहनों की आवाजाही रोकने के लिए इस बार संन्यास आश्रम रोड व चार मरला कालोनी मोड़ पर भी बेरिकेडिंग की गई है। पुलिस ने इसके लिए विशेष प्लान तैयार किया है। अब चार पहिया व तीन पहिया वाहनों के अलावा भारी वाहनों की रात 10 बजे से पहले सुबह 11 बजे के बाद शहर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा। गोदाम व थोक व्यापारियों के यहां रात के समय ही माल सप्लाई हो सकेगा। हालांकि प्रशासन इन सबके समाधान के लिए कोई अस्थाई पार्किंग नहीं बनाई।

फतेहाबाद। जवाहर चौक में लगाए गए बेरिकेट्स। *फोटो : हरिभूमि*

धनतेरस 18 को, सजने लगे शहर के बाजार

इस साल कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि 18 अक्टूबर शनिवार को दोपहर 12 बजकर 18 मिनट से आरंभ हो रही है जोकि 19 अक्टूबर रविवार को दोपहर 1 बजकर 51 मिनट तक रहेगी। प्रदोष काल के कारण धनतेरस का पर्व 18 अक्टूबर शनिवार को मनाया जाएगा। इस साल धनतेरस पर काफी शुभ योगों का निर्माण होने वाला है। इस दिन ब्रह्म योग, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के साथ बुधादित्य और कलात्मक योग का निर्माण होगा।

स्टेप अप एसआईपी : बच्चे की पूरी पढ़ाई फ्री, फिर भी 50 लाख बचेंगे

भविष्य | बिजनेस डेस्क

अगर आपको भी बच्चे की पढ़ाई और अन्य खर्च से समय रहते मुक्ति पानी है तो आपके लिए स्टेप अप एसआईपी एक अहम निवेश का विकल्प साबित हो सकती है। इसके जरिये निवेश करने से आपको बड़ी राहत मिलेगी। स्कूल की बढ़ती फीस और हायर एजुकेशन की चिंता अक्सर अभिभावकों को सताती हैं। निवेश के जानकारों का कहना है कि समय रहते इस पर ध्यान दिया जाए तो इस टेंशन को 'बाय-बाय' कहा जा सकता है। इसके लिए आपको एसआईपी के जरिये निवेश करना होगा और इसे बढ़ाते जाना होगा। यह योजना आपके बच्चे की शिक्षा का खर्च उठा सकती है। साथ ही, बच्चे के 22 साल का होने तक आपके पास 50 लाख रुपये से ज्यादा बच सकते हैं। इसके लिए आपको बच्चे के जन्म से हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी शुरू करनी होगी। इसे 10 साल तक हर साल 10% बढ़ाना होगा। 10 साल बाद कॉन्ट्रिब्यूशन बंद कर देना है। फिर बच्चे की 10 से 22 साल की उम्र तक हर महीने 25,000 रुपये निकालने हैं। यह सब बिना किसी एजुकेशन लोन के संभव है।

यह दिया सुझाव

99% माता-पिता बिना किसी स्कीम के स्कूल फीस पर लाखों रुपये खर्च करते हैं। 'क्या हो अगर 10 साल की एसआईपी आपके बच्चे की शिक्षा को लगभग मुफ्त में फंड कर सके... और फिर भी उनके सपनों के लिए लाखों छोड़ जाए?' उन्होंने एक स्टेप-अप एसआईपी स्ट्रैटेजी का सुझाव दिया है। यह स्ट्रैटेजी महंगे एजुकेशन लोन की जगह ले सकती है। यह लंबी अवधि की वित्तीय योजना है।

कैसे काम करती है स्कीम?

यह योजना इस तरह काम करती है। जब आपका बच्चा पैदा हो तब हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी शुरू करें। अगले 10 सालों तक हर साल एसआईपी की राशि को 10% बढ़ाएं। 10 साल पूरे होने के बाद एसआईपी में पैसा डालना बंद कर दें। जब बच्चा 10 साल का हो जाए तब से 22 साल का होने तक हर महीने 25,000 रुपये निकालें। यह पैसा बच्चे की फीस के लिए होगा। इस योजना में 12% सीएजीआर (चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर) मानी गई है।

क्या है पूरा गणित?

निवेश के गणित के अनुसार, आप 10 साल में कुल 19.12 लाख रुपये का निवेश करेंगे। तब तक यह राशि बढ़कर 32.69 लाख रुपये हो जाएगी। अगले 12 सालों में आप एजुकेशन के लिए कुल 36 लाख रुपये निकालेंगे। इसके बावजूद आपके खाते में 51 लाख रुपये बचे रहेंगे। उन्होंने कहा, 'पैसे निकालते समय भी कंपाउंडिंग काम करती है।' इसका मतलब है कि बचा हुआ पैसा बढ़ता रहता है। इससे भुगतान के दौरान भी धन बढ़ता रहेगा।

दंग कर देने वाले रिजल्ट

इस योजना की तुलना एजुकेशन लोन से करें। 36 लाख रुपये के एजुकेशन लोन पर 11% ब्याज दर से 10 साल के लिए ईएमआई लगभग 50,000 रुपये प्रति माह होगी। यह एसआईपी से निकाली गई राशि से दोगुना है। इसमें ब्याज का भारी बोझ भी होता है। कौशिक ने कहा कि यह रणनीति आपकी आय वृद्धि से मेल खाती है। उन्होंने बताया, '10 हजार रुपये महीने से शुरू करें और 10वें साल तक आप सालाना 2.8 लाख रुपये का निवेश कर रहे होंगे जो प्रमोशन और वेतन वृद्धि के अनुरूप है।' उनके कुछ सुझाव भी हैं। कम लागत वाले इंडेक्स फंड का उपयोग करें। आपात स्थितियों के लिए हमेशा कुछ लिक्विडिटी बनाए रखें। अपनी प्रगति की सालाना समीक्षा करते रहें। उन्होंने निष्कर्ष निकाला, '10 साल के लिए एक अनुशासित, स्टेप-अप एसआईपी एक दशक के ओवरटाइम से कहीं ज्यादा कर सकती है।' यह तनाव-मुक्त और स्मार्ट कंपाउंडिंग का तरीका है।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- सीए ने निवेशकों को बताया क्रिप्टोकरेंसी से होने वाले नफे-नुकसान का गणित
- क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करते हैं तो इस पर लगने वाले टैक्स के बारे में भी जान लें

100 रुपये प्रॉफिट कमाने के बाद 100 रुपये गंवाने पर भी चुकाने होंगे 30 रुपये

क्रिप्टो नहीं, टैक्स का मायाजाल पैसे गंवाए तो भी देना होगा कर

अगर आप बाजार में शॉर्ट टर्म निवेश करना चाहते हैं तो आपके कुछ स्कीम बाजार में मौजूद हैं। इनमें रिटर्न भी बढ़िया मिलता है इसे लिक्विड फंड के नाम से जाना जाता है। ऐसे निवेश में पैसा उन सिक्योरिटीज में निवेश करते हैं, जिनकी मैच्योरिटी 91 दिनों से अधिक नहीं होती है। निवेशकों का पैसा इसके जरिए मनी मार्केट, शॉर्ट टर्म कॉरपोरेट डिपॉजिट और ट्रैजरी में लगाया जाता है।

देश में कई सालों से लोग क्रिप्टोकरेंसी में निवेश कर रहे हैं। कई तो इससे मोटा मुनाफा भी कमा चुके हैं और कई अपनी जमापूंजी गंवा चुके हैं। लेकिन अब सरकार ने क्रिप्टोकरेंसी में निवेश के नियम कड़े कर दिए हैं। क्रिप्टोकरेंसी में होने वाली कमाई पर 30 फीसदी का टैक्स लगता है। खास बात यह है कि आपने क्रिप्टोकरेंसी में 100 रपये का प्रोफिट कमाया और बाद में उसे इसी एसेट्स में गंवा दिया तो भी आपको 30 रुपये टैक्स देना होगा। पिछले कुछ सालों में क्रिप्टोकरेंसी में निवेश का चलन काफी तेजी से बढ़ा है। वहीं पिछले साल डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिकी राष्ट्रपति का चुनाव जीता था। तब से क्रिप्टो में और तेजी देखने को मिली है। इसे देखते हुए अब काफी भारतीय बिटकॉइन, इथेरियम, बाइनेंस, डॉगकॉइन आदि क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करने लगे हैं। चूंकि क्रिप्टोकरेंसी पर किसी भी सरकार का केंद्रीय बैंक का कंट्रोल नहीं है, ऐसे में इसमें होने वाले प्रॉफिट पर भारत में टैक्स से जुड़े नियम काफी सख्त हैं। दरअसल, क्रिप्टोकरेंसी में टैक्स का नियम कुछ ऐसा है कि इसमें पैसे कमाने पर ही नहीं बल्कि पैसे गंवाने पर भी इनकम टैक्स चुकाना पड़ सकता है। फिर चाहे आपका पूरा पोर्टफोलियो घाटे में ही क्यों ना चल रहा हो। भारत के सख्त क्रिप्टो टैक्स नियमों के तहत, निवेशकों को हर रुपये के मुनाफे पर फ्लैट 30% टैक्स देना होता है, भले ही कुल मिलाकर नुकसान हुआ हो। एक्सपर्ट का कहना है कि यह सिस्टम दुनिया के सबसे कठोर नियमों में से एक है, जिससे भारतीय क्रिप्टो निवेशकों को राहत मिलने की गुंजाइश बहुत कम है। इस टैक्स सिस्टम को लेकर एक चार्टर्ड अकाउंटेंट (सीए) ने अपनी राय रखी और क्रिप्टोकरेंसी निवेशकों को अगाह किया है कि इसमें सोच समझकर ही निवेश करें, वरना यह घाटे का सौदा हो सकता है।

क्रिप्टो टैक्सेशन की बताई सच्चाई

एक सीए ने सोशल मीडिया पर क्रिप्टो टैक्सेशन की सच्चाई बताई है। उन्होंने पोस्ट के जरिए मैसेज दिया है कि भले ही आपने क्रिप्टो में 100 रुपये गंवाए हों, आपको 30 रुपये टैक्स के रूप में चुकाने पड़ सकते हैं। उन्होंने समझाया कि मान लीजिए कि आपने एक ही वित्तीय वर्ष में बिटकॉइन पर 100 रुपये का मुनाफा कमाया, लेकिन इथेरियम पर 200 रुपये का नुकसान उठाया। किसी भी दूसरे निवेश में आपको कुल 100 रुपये का नुकसान होता। लेकिन क्रिप्टो में ऐसा नहीं है। बिटकॉइन से हुई 100 रुपये की कमाई पर आपको 30% यानी 30 रुपये टैक्स के रूप में चुकाने होंगे। फिर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इथेरियम या किसी दूसरी क्रिप्टो से आपको कितना नुकसान हुआ है। ऐसे में आपको कुल 130 रुपये की चपत लगेगी।

क्या है क्रिप्टो से जुड़े नियम

- आयकर अधिनियम की धारा 115बीबीएच के तहत क्रिप्टो एसेट्स के लिए कुछ खास और कड़े नियम हैं।
- नुकसान की भरपाई नहीं (आप एक क्रिप्टो नुकसान को दूसरे मुनाफे से नहीं काट सकते)।
- नुकसान आगे नहीं ले जा सकते (इसे समायोजित नहीं कर सकते)।
- अधिग्रहण की लागत को छोड़कर कोई कटौती नहीं।
- ट्रेडिंग फीस जैसे चार्ज भी नहीं घटाए जाते
- इथेरियम पर 200 रुपये के नुकसान को अनदेखा कर दिया जाएगा और बिटकॉइन पर हुए 100 रुपये के मुनाफे पर 30% यानी 30 रुपये टैक्स देना होगा।
- कुल मिलाकर 130 रुपये का नुकसान होगा। यहां तक कि ट्रेडिंग फीस, गैस चार्ज, माइनिंग की लागत, या एक्सचेंज कमीशन जैसी चीजें आपके टैक्सेबल मुनाफे से नहीं घटाई जा सकतीं।

क्या है क्रिप्टोकरेंसी

क्रिप्टोकरेंसी एक डिजिटल या वर्चुअल मुद्रा है जो कंप्यूटर नेटवर्क पर सुरक्षित और विकेंद्रीकृत तरीके से काम करती है। यह पारंपरिक मुद्राओं की तरह नहीं है, जो सरकारों द्वारा नियंत्रित और जारी की जाती हैं।

विशेषताएं

1. विकेंद्रीकृत : क्रिप्टोकरेंसी किसी एक केंद्रीय प्राधिकरण द्वारा नियंत्रित नहीं होती है।
2. डिजिटल : यह पूरी तरह से डिजिटल रूप में मौजूद होती है।
3. क्रिप्टोग्राफी : सुरक्षा के लिए क्रिप्टोग्राफिक तकनीकों का उपयोग किया जाता है।
4. ब्लॉकचेन : अधिकांश क्रिप्टोकरेंसी ब्लॉकचेन तकनीक पर आधारित होती हैं।
5. सीमित आपूर्ति : कई क्रिप्टोकरेंसी की आपूर्ति सीमित होती है।

प्रमुख क्रिप्टोकरेंसी

1. बिटकॉइन : पहली और सबसे प्रसिद्ध क्रिप्टोकरेंसी।
2. एथेरियम : स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट्स के लिए जानी जाती है।
3. रिपल : अंतर्राष्ट्रीय भुगतान के लिए उपयोग।
4. लाइटकॉइन : बिटकॉइन का एक वैकल्पिक।
5. कार्डानो : शोध-आधारित ब्लॉकचेन प्लेटफॉर्म।

उपयोग

1. डिजिटल भुगतान: ऑनलाइन लेनदेन के लिए।
2. निवेश: कई लोग क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करते हैं।
3. विकेंद्रीकृत अनुप्रयोग : एथेरियम जैसे प्लेटफॉर्म पर।
4. सीमापार लेनदेन: पारंपरिक तरीकों की तुलना में तेज और सस्ता।

जोखिम

1. अस्थिरता: कीमतें बहुत तेजी से बदल सकती हैं।
2. सुरक्षा जोखिम: हैकिंग और चोरी का खतरा।
3. नियामक अनिश्चितता: विभिन्न देशों में नियम अलग-अलग हैं।
4. घोटाले: फ्रॉड और स्कैम का खतरा।
5. तकनीकी जोखिम: तकनीकी समस्याएं आ सकती हैं।

दिवाली बोनस का करें सही इस्तेमाल कर सकते हैं अपने लिए बड़ी बचत

मयूचुअल फंड्स, रिटायरमेंट प्लान या कर्ज चुकाने में लगाएं, जरूरतों के लिए 30%, इच्छाओं के लिए- 30%, वेल्थ बनाने के लिए-40% प्रयोग करें

तोहफा | बिजनेस डेस्क

'बोनस को बांटने की प्रक्रिया में परिवार को जरूर शामिल करें, ताकि हर कोई मस्ती और अनुशासन के बीच बैलेंस समझे।' इस तरह समझदारी से खर्च और स्मार्ट निवेश के साथ आपका दिवाली बोनस न सिर्फ त्योहार को खास बनाएगा, बल्कि आपके भविष्य को भी बेहतर बनाने के काम आ सकता है।

दिवाली को महज कुछ दिन ही शेष बचे हैं। ऐसे में हर साल दिवाली पर ज्यादातर कंपनियां अपने कर्मचारियों को बोनस देती हैं। यह बोनस हमारे लिए खुशियों का तोहफा भी होता है, साथ ही अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने का मौका भी। हालांकि अक्सर होता यह है कि जैसे ही बोनस हाथ में आता है, हम शॉपिंग, नई चीजें खरीदने और शौक पूरे करने में पैसा खर्च कर देते हैं। ऐसे में यह जानना जरूरी है कि इस पैसे का स्मार्ट उपयोग क्या हो सकता है। इसका आप कहां सही इस्तेमाल कर सकते हैं। कैसे अपनी वेल्थ बना सकते हैं या कर्ज उतार सकते हैं।

स्मार्ट तरीके से बांटें : सही बैलेंस बनाएं

बोनस को खर्च करने का सबसे अच्छा तरीका ये है कि इसे दो हिस्सों में बांट लें-एक हिस्सा त्योहार मनाने के लिए और दूसरा भविष्य की जरूरतों के लिए। बाजार के जानकारों के अनुसार बोनस का 50% हिस्सा त्योहार और लाइफस्टाइल पर खर्च करें और बाकी 50% म्यूचुअल फंड्स, रिटायरमेंट या कर्ज चुकाने जैसे लॉन्ग-टर्म गोल्स के लिए रखें। अगर आपके ऊपर ज्यादा जिम्मेदारियां हैं, तो तीन हिस्सों में बांट सकते हैं। जैसे:-

- जरूरतों के लिए- 30%
- इच्छाओं के लिए- 30%
- वेल्थ बनाने के लिए- 40%

जिंदगी के स्टेज के हिसाब से बांटें।

इसे बांटने का हर किसी का तरीका अलग हो सकता है। 'अपने बोनस को अपनी जिंदगी के स्टेज के हिसाब से बांटें। अगर आपके ऊपर हाई-इंटरेस्ट कर्ज है, तो 60-70% बोनस उसको चुकाने में लगाएं।'

सेलिब्रेशन के लिए बजट बनाएं

त्योहार की खुशी फाइनेंशियल टेंशन में न बदल जाए इसके लिए सही बजट बनाना जरूरी है। 'पहले अंदाजा लगाएं कि त्योहार में कितना खर्च होगा-गिफ्ट्स, घूमने-फिरने, सजावट, ट्रैवल और धार्मिक रस्मों पर।' इस खर्च को अपने बोनस और रेगुलर इनकम के साथ मिलाकर देखें। इससे आपको एक फिक्स्ड बजट मिलेगा और आप बाकी पैसों को पहले ही निवेश में डालकर अपने गोल्स को प्रायोरिटी दे सकते हैं।

स्मार्ट तरीके से सेलिब्रेट करें

त्योहारों में ओवरस्पेंडिंग का खतरा हमेशा रहता है। 'बोनस को "एक्स्ट्रा" पैसा समझकर फूंक न दें।' क्रेडिट कार्ड या पर्सनल लोन लेकर शॉपिंग करना तो बिल्कुल अवॉइड करें, क्योंकि इनके इंटरेस्ट रेट्स बहुत ज्यादा होते हैं और ये कर्ज के जाल में फंसा सकते हैं। बिना कर्ज के सेलिब्रेशन के लिए क्रिएटिव तरीके अपनाएं। 'पॉटलक गैदरिंग्स करें, दीया डेकोरेशन बनाएं या अर्ली-बर्ड ट्रैवल डील्स का फायदा उठाएं।'

हाई-इंटरेस्ट कर्ज चुकाएं

अपने बोनस का कुछ हिस्सा क्रेडिट कार्ड के बिल, पर्सनल लोन या किसी भी हाई-इंटरेस्ट कर्ज को चुकाने में लगाएं। इससे भविष्य में आपका पैसा बचेगा। 'सबसे पहले अपने कर्ज की लिस्ट बनाएं, सबसे ज्यादा इंटरेस्ट वाले कर्ज को पहले चुकाएं। यहां तक कि आंशिक पेमेंट भी लोन की अवधि और टोटल इंटरेस्ट को कम कर सकता है।' अगर आपके पास महंगा कर्ज है, तो नए निवेश से पहले इसे चुकाना प्रायोरिटी होनी चाहिए।

निवेश की स्ट्रैटजी

निवेश के लिए ऑप्शन्स आपकी जरूरतों पर निर्भर करते हैं। '3 साल से कम की अवधि के लिए लिक्विड फंड्स या रिकरिंग डिपॉजिट्स में निवेश करें। मीडियम से लॉन्ग-टर्म के लिए डायवर्सिफाइड इक्विटी म्यूचुअल फंड्स या इंडेक्स फंड्स चुनें।' अपने पोर्टफोलियो में डायवर्सिफिकेशन के लिए सोवरेन गोल्ड बॉन्ड्स या गोल्ड ईटीएफ भी जोड़ सकते हैं। महत्वपूर्ण है कि रिटर्न और लिक्विडिटी में बैलेंस बनाएं, ताकि आपका शॉर्ट-टर्म पैसा रिस्क में न आए। दिवाली बोनस आपके फाइनेंशियल गोल्स को तेजी से पूरा करने का मौका है। 'बोनस या तो एक हफ्ते की शॉपिंग में खत्म हो सकता है या सालों तक आपके लिए काम कर सकता है। इसे फाइनेंशियल फिटनेस का बूस्टर समझें।'

'फंड ऑफ फंड्स' में करें निवेश, दोनों हाथों में रहेंगे लड्डू

बिजनेस डेस्क

सोना और चांदी की कीमत इस समय रॉकेट की रफ्तार से भाग रही है। वहीं, फेस्टिव सीजन के कारण इसकी कीमत में और तेजी आ सकती है। अगर आप धनतेरस पर सोना और चांदी दोनों में निवेश करना चाहते हैं तो ' कॉम्बो फंड ऑफ फंड्स ' एक बेहतरीन ऑप्शन हो सकते हैं। दरअसल, इस समय म्यूचुअल फंड कंपनियां निवेशकों को दोनों धातुओं में आसानी से निवेश करने का मौका दे रही हैं। इसके लिए वे डुअल-एसेट पैसिव फंड्स (ऐसे फंड जो सोने और चांदी दोनों में निवेश करते हैं) लॉन्च कर रही हैं। पिछले दो साल में सोने की कीमत करीब दोगुनी हो गई है। वहीं, औद्योगिक मांग और सप्लाई में कमी के कारण चांदी भी तेजी से बढ़ रही है। ऐसे में निवेशक महंगाई से बचने और अपने पोर्टफोलियो को मजबूत करने के लिए गोल्ड और सिल्वर फंड ऑफ फंड्स (एफओएफ) की ओर रुख कर रहे हैं।

अलग-अलग निवेश की जरूरत नहीं

डुअल-एसेट पैसिव फंड्स में निवेश के बाद सोना और चांदी, दोनों में अलग-अलग निवेश करने की जरूरत नहीं पड़ती। यानी आप फिजिकल सोना-चांदी खरीदे या अलग-अलग ईटीएफ में निवेश किए बिना दोनों की तेजी का फायदा उठा सकते हैं। इस नई कैटेगरी में चार बड़े फंड्स सामने आए हैं। इनमें कोटक गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ, मिराए एसेट गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ, एडलवाइस गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ और मोतीलाल ओसवाल गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ शामिल हैं।

1. कोटक गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ

- यह फंड 20 अक्टूबर 2025 तक सब्सक्रिप्शन के लिए खुला है। निवेशक सिर्फ 100 से निवेश शुरू कर सकते हैं।
- इसका मकसद कोटक गोल्ड ईटीएफ और कोटक सिल्वर ईटीएफ में निवेश करके लंबी अवधि में अच्छा रिटर्न कमाना है।
- यह एफओएफ एक खास क्वांटिटेटिव मॉडल का इस्तेमाल करता है। यह मॉडल सोने और चांदी की कीमतों के उतार-चढ़ाव के आधार पर अपने आप तय करता है कि किस धातु में कितना पैसा लगाना है।

2. मिराए एसेट गोल्ड सिल्वर पैसिव एफओएफ

इस फंड में शुरुआत में 50:50 का आवंटन होता है, लेकिन सोने-चांदी के अनुपात (गोल्ड-सिल्वर रेश्यो) व महंगाई, ग्लोबल ब्याज दरें, डॉलर की मजबूती जैसे बड़े आर्थिक संकेतकों के आधार पर यह अनुपात बदलता रहता है। इस फंड का एक्सपेंस रेशियो 0.18% है और 7 अक्टूबर 2025 तक इसका एयूएम (एसेट्स अंडर मैनेजमेंट- फंड में कुल जमा राशि) 67 करोड़ रुपये था।

3. एडलवाइस गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ

यह फंड सितंबर 2022 में लॉन्च हुआ था। यह भारत का सबसे पुराना डुअल-मेटल फंड है और हाल के दिनों में धातुओं की तेजी से इसने काफी फायदा उठाया है। इसमें 500 रुपये से निवेश शुरू कर सकते हैं। यह फंड सोने और चांदी में लगभग बराबर हिस्सेदारी रखता है यानी 49.98% सोने में और 49.83% चांदी में। फंड ने पिछले एक साल में 57.9% का रिटर्न दिया है और पिछले तीन सालों में सालाना 31.97% का रिटर्न दिया है।

4. मोतीलाल ओसवाल गोल्ड एंड सिल्वर ईटीएफ एफओएफ

यह फंड अक्टूबर 2022 में लॉन्च हुआ था और इसने पिछले दो सालों में एक मजबूत ट्रैक रिकॉर्ड बनाया है। यह फंड 69.34% आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल गोल्ड ईटीएफ में और 30.17% निप्पॉन इंडिया सिल्वर ईटीएफ में निवेश करता है। इसका एयूएम 244.32 करोड़ रुपये है, एक्सपेंस रेशियो 0.15% है और कोई एग्जिट लोड नहीं है। फंड ने पिछले एक साल में 59.7% का रिटर्न दिया है। वहीं पिछले दो सालों में सालाना 18.1% का सीएजीआर व पिछले तीन सालों में सालाना 11.6% का रिटर्न दिया है।

एफडी साइलेंट वेल्थ ट्रैप, सिर्फ इससे ही नहीं बन पाओगे अमीर दूसरे विकल्पों पर भी दें ध्यान

सुझाव | बिजनेस डेस्क

अगर आप फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) में निवेश को ही असली निवेश समझते हैं तो आप गलत हो सकते हैं। एक एक्सपर्ट ने एफडी में निवेश को 'साइलेंट वेल्थ ट्रैप' बताया है। यानी एक ऐसा जाल जिसमें आप अमीर बनने के लिए जाते हैं, लेकिन अंत में फंस जाते हैं। क्योंकि सिर्फ एफडी में निवेश करके अमीर नहीं बना जा सकता। एक्सपर्ट ने इसका कारण भी बताया है। जानकारों का कहना है कि बड़ा फंड बनाने के लिए सिर्फ एफडी में निवेश करना सही नहीं है। उन्होंने उन लोगों को भी चेतावनी दी है जो एफडी में निवेश को ही असली निवेश समझ लेते हैं। वह बताते हैं कि यह जाल तब बनता है जब लोग अपना ज्यादातर पैसा एफडी में रखते हैं। वे महंगाई के असर और पैसे बढ़ाने के मौकों को नजरअंदाज कर देते हैं। एफडी में आपका पैसा तो सुरक्षित रहता है, लेकिन आपको रिटर्न बेहद कम मिलता है। इसलिए सिर्फ एफडी के भरोसे नहीं रहें। निवेश के लिए एसआईपी जैसे विकल्प भी तलाशें।

निवेश के लिए एसआईपी जैसे विकल्प भी तलाशें, तभी बढ़ा पाएंगे पैसा

यह मिलता है ब्याज

आज एफडी की सालाना दरें लगभग 6.3% से 7% हैं, जबकि महंगाई करीब 2.1% है। आपकी असली कमाई लगभग 4.2 से 4.9% प्रति वर्ष है।' अगर आप 10 लाख रुपये एफडी में रखते हैं, तो एक साल बाद उसकी असली खरीदने की ताकत सिर्फ 10.42 लाख रुपये ही रह जाती है। इसका मतलब है कि आपका पैसा असल में बहुत कम बढ़ता है।

लोगों को एफडी पर भरोसा क्यों

भारत के लगभग 70% परिवार अभी भी एफडी को ही अपनी बचत का मुख्य जरिया मानते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि लोगों को इसमें पैसे की पूरी सुरक्षा का भरोसा मिलता है। साथ ही, उन्हें पैसे के लेन-देन की कम जानकारी होती है और वे बाजार के उतार-चढ़ाव से डरते हैं।

यह दी चेतावनी

उन्होंने चेतावनी दी कि सुरक्षा का यह भरोसा तभी तक सही है जब तक महंगाई कम रहती है। उन्होंने लिखा कि अगर महंगाई आपकी एफडी से मिलने वाले रिटर्न से ज्यादा हो जाती है तो आपकी असली दौलत कम होने लगती है। उन्होंने जोर देकर कहा कि वित्तीय सुरक्षा लापरवाही से नहीं, बल्कि निवेश को अलग-अलग जगह बांटने से मिलती है।

निवेश का तरीका बताया

एक संतुलित निवेश का तरीका सुझाया। इसमें फिक्स्ड डिपॉजिट के साथ शेयर बाजार (जिसने पहले 12 से 15% सीएजीआर का रिटर्न दिया है), डेट फंड (6.5 से 8%) और महंगाई से बचाने वाले निवेश जैसे सोना या आरईआईटीएस को शामिल करना चाहिए। उन्होंने सलाह दी कि अपने निवेश को एक ही जगह न रखकर अलग-अलग जगह बांटें।

ये हैं निवेश के विकल्प

1. **शेयर बाजार (इक्विटी)- शेयर :** कंपनियों के हिस्सेदारी वाले शेयर।
   - **म्यूचुअल फंड :** पेशेवर प्रबंधन वाले फंड जो विविध शेयरों में निवेश करते हैं।
   - **ईटीएफ (एक्सचेंज ट्रेडेड फंड):** शेयर बाजार में ट्रेड होने वाले फंड।
2. **फिक्स्ड इनकम निवेश- फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी):** बैंकों में निश्चित अवधि के लिए जमा।
   - **बॉन्ड:** कंपनियों या सरकार द्वारा जारी कर्ज साधन।
   - **डेब्ट म्यूचुअल फंड:** बॉन्ड और अन्य फिक्स्ड इनकम साधनों में निवेश।
3. **रियल एस्टेट- आवासीय संपत्ति :** घर या फ्लैट।
   - **वाणिज्यिक संपत्ति :** ऑफिस, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स।
   - **आरईआईटी (रियल एस्टेट इनवेस्टमेंट ट्रस्ट):** रियल एस्टेट में निवेश के लिए ट्रेडेबल यूनिट्स।
4. **सोना और कीमती धातुएं-भौतिक सोना :** सिक्के, बार।
   - **गोल्ड ईटीएफ :** सोने में निवेश के लिए एक्सचेंज ट्रेडेड फंड।
   - **सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड:** सरकार द्वारा जारी।
5. **म्यूचुअल फंड- इक्विटी फंड:** शेयर बाजार में निवेश।
   - **हाइब्रिड फंड:** इक्विटी और डेट का मिश्रण।
   - **डेब्ट फंड:** फिक्स्ड इनकम साधनों में निवेश।
6. पीपीएफ (पब्लिक प्रोविडेंट फंड)- लंबी अवधि की बचत योजना जो कर लाभ देती है।
7. एनपीएस (नेशनल पेंशन सिस्टम)- रिटायरमेंट के लिए पेंशन योजना।
8. यूएलआईपी (यूनिट लिंक्ड इंश्योरेंस प्लान)- निवेश और बीमा का मिश्रण।
9. क्रिप्टोकरेंसी- डिजिटल मुद्राएं जैसे बिटकॉइन, एथेरियम (उच्च जोखिम)।
10. एफडी और आरडी (रिकरिंग डिपॉजिट)- बैंकों में निश्चित आय के विकल्प।

खबर संक्षेप

वाहन की चपेट में आने से बाइक सवार की मौत

ओढां। राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर 9 पर स्थित गांव मिठड़ी के पास एक अज्ञात वाहन ने बाइक को चपेट में ले लिया। हादसे में मोटरसाइकिल सवार 70 वर्षीय बुजुर्ग की मौके पर ही मौत हो गई। सूचना मिलते ही ओढ़ा पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को नागरिक अस्पताल के शवगृह में रखवा दिया। थाना प्रभारी महिला इंस्पेक्टर कमलेश रानी ने बताया कि मंडी कालांवाली निवासी रल्ला सिंह बाइक पर मिठड़ी बस स्टैंड के निकट हाईवे पर डिवाइडर से दूसरी तरफ जाने के लिए बने कट से जब वह क्रॉस हो रहा था तो इसी दौरान सिरसा की तरफ से आ रहे अज्ञात वाहन ने बाइक को चपेट में ले लिया। पुलिस ने अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज कर लिया और शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों को सौंप दिया।

डीईओ ने स्काउट मास्टर को किया सम्मानित

सिरसा। उत्तरप्रदेश के अयोध्या में बीती 12 सितंबर से 14 सितंबर तक आयोजित राष्ट्रीय रक्तदान महोत्सव में सिरसा के स्काउट मास्टर आनंद प्रकाश कारगवाल को सम्मानित किए जाने पर जिला शिक्षाधिकारी सिरसा ने भी उन्हें अपने कार्यालय में सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि सिरसा के स्काउट मास्टर आनंद प्रकाश कारगवाल राजकीय माध्यमिक विद्यालय चौबुर्जा में शारीरिक शिक्षक के पद पर कार्यरत हैं और उन्होंने अब तक 39 बार रक्तदान कर दूसरों का जीवन बचाने के लिए नेक कार्य किया है। इस उपलब्धि के लिए आनंद प्रकाश कारगवाल को राष्ट्रीय सेवा रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जिला शिक्षा अधिकारी सुनीता साईं ने शिक्षक आनन्द प्रकाश कारगवाल की सामाजिक सेवाओं की मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

युवक पर हमले के मामले में तीन युवक गिरफ्तार

फतेहाबाद। एक युवक पर हमला करने के मामले में भूना पुलिस ने तीन युवकों को काबू किया है। पकड़े गए आरोपियों की पहचान गुरविन्द्र सिंह उर्फ काका पुत्र तजिन्द्र सिंह, गुरजीत सिंह पुत्र सुखदेव सिंह तथा बेअन्त सिंह पुत्र तजिन्द्र सिंह, तीनों निवासी गांव डुल्ट, जिला फतेहाबाद के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपियों से एक स्विफ्ट कार व तीन डंडे बरामद किए हैं। थाना भुना प्रभारी उपनिरीक्षक ओमप्रकाश ने बताया कि 3 अक्टूबर को गांव डुल्ट निवासी अंग्रेज सिंह ने थाना भुना में शिकायत दी थी कि उसके साथ गांव के कुछ व्यक्तियों ने रास्ता रोककर मारपीट की और जान से मारने की धमकी दी।

मेंहदी में जिया, यशोदी रही अव्वल

सिरसा। सीएमके नेशनल स्नातकोत्तर महाविद्यालय मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसमें छात्राओं ने बढ़ चढक़र भाग लिया। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. रंजना ग्रोवर ने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं मानसिक विकास, कौशल विकास में सहायक होती हैं। इसलिए छात्राओं को शिक्षण के साथ साथ व्यवहारिक रचनात्मक गतिविधियों में भी भाग लेते रहना चाहिए। प्रतियोगिता में छात्राओं ने अपने कौशल व कला का उत्तम प्रदर्शन करते हुए, विभिन्न प्रकार के मेंहदी के कलात्मक डिजाइन बनाए, जो कि प्रतियोगिता में आकर्षण का विषय रहा।

---

24 तक समाधान न होने पर 27 से फिर शुरू करेंगे धरना, 95 लंबित मांगों को उठाया

अल्टीमेटम के बाद अध्यापक संघ और शिक्षा अधिकारियों के बीच हुई बातचीत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

शिक्षकों की लंबित मांगों को लेकर अध्यापक संघ द्वारा दिए गए अल्टीमेटम के बाद जिला शिक्षा अधिकारी और जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी के साथ संघ प्रतिनिधिमंडल की बातचीत हुई। जिला प्रधान राजपाल मित्ताथल की अध्यक्षता में पहुंचे प्रतिनिधिमंडल ने बैठक में अध्यापकों के 97 पेंडिंग मामलों को उठाया गया। संघ ने चेतावनी देते हुए कहा कि यदि अधिकारियों ने 24 अक्टूबर तक शिक्षकों की लंबित मांगों को पूरा नहीं किया तो अध्यापक संघ 27 अक्टूबर से फिर से धरना शुरू कर देगा।

प्रतिनिधि मंडल में राज्य ऑडिटर सुरजीत दुसाद , जिला वरिष्ठ उप प्रधान डॉ. नीतू डूडेजा, जिला कोषाध्यक्ष जगजीत मुड़ाही, जिला सह सचिव देवीलाल रतिया, जिला ऑडिटर भगत सिंह बेनीवाल, रतिया ब्लॉक प्रधान रजवंत सिंह, भट्टूकलां ब्लॉक प्रधान सतपाल ढाका, भूना ब्लॉक प्रधान दलबीर सिंह, सचिव नरेश कुमार, फतेहाबाद ब्लॉक उप प्रधान दलवंती नैन व कोषाध्यक्ष राजेश गोठड़ा उपस्थित रहे।

फतेहाबाद। शिक्षा अधिकारी से बातचीत करते अध्यापक संघ के पदाधिकारी।

शिक्षक ऑनलाइन डायरी नहीं लिखेंगे

अध्यापक संघ ने कहा कि शिक्षक ऑनलाइन डायरी नहीं लिखेंगे। फालतू के ऐप जो डाउनलोड करवाए जा रहे हैं, अध्यापक उसका भी हम पुरजोर विरोध करते हैं। अध्यापकों को छुट्टी के दिन भी गूगल मीट या अन्य मीटिंगों में उलझाया जाता है उसका भी हम पुरजोर विरोध करते हैं। बैठक में जिला कार्यालय के अधीक्षक गुलाब सिंह भाकर, क्लर्क राजकुमार और मनीष कुमार भी उपस्थित रहे।

पत्र में किया था बीमारियों का जिक्र

जिला सचिव देसराज माचरा ने बताया कि बातचीत में पहले जिले में जो मुख्य शिक्षक की पदोन्नति की सूची जारी की गई है उसमें केवल 15 जेबीटी अध्यापकों को मुख्य शिक्षक बनाया गया है जबकि जिले में लगभग 50 पोस्ट मुख्य शिक्षक की खाली है। इस पर संघ ने एतराज किया तो डीईओ ने इस पर विचार करने का आश्वासन दिया। संघ ने 2011 के बाद जेबीटी अध्यापकों की सीनियरटी लिस्ट जारी न होने, एसीपी मामले बीईओ द्वारा जिला कार्यालय में भेजने, स्कूलों में सैनेटरी पैड उपलब्ध करवाने, एचकेआरएन के तहत लगे अध्यापकों के वेतनमान का पत्र जारी करने का मामला उठाया। एसीपी ऑनलाइन करने में लिपिकों एवं डीडीओ को एक बार दोबारा जानकारी मीटिंग के माध्यम से दी जाएगी। सी एंड वी अध्यापकों की एसीपी की मांग पर बताया गया कि निदेशालय की आईडी बंद है आईडी खुलते ही मामले हल किए जाएंगे। बीएलओ की ड्यूटी जहां बूथ है उस स्कूल के अध्यापकों की लगाई जाएगी। कुछ स्कूलों में पाठ्य पुस्तक उपलब्ध नहीं होने का मामला सुलझाया जाएगा। कंप्यूटर टीचर्स व एल ए की सैलरी आ गई है जिसका पत्र जारी कर दिया गया है। महिला गेस्ट अध्यापिकाओं की 1 साल में 22 कैजुअल होती हैं यानि एक महीने में केवल दो कैजुअल लीव ली जा सकती हैं। मिड डे मील वर्कर्स का मानदेय जारी कर दिया गया है। जिन स्कूलों में पोस्ट खाली है वहां अध्यापकों की सहमति से व्यवस्था की जाएगी। कंप्यूटर टीचर की जॉब सिक्योरिटी बारे कहा गया कि यह तो सरकार का काम है। महिला अध्यापिकाओं की बीएलओ की ड्यूटी ना लगने बारे कहा गया।

फतेहाबाद। मशरूम उत्पादन करते जिला के किसान। फोटो : हरिभूमि

मशरूम उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए

40 से 85% तक अनुदान दे रहा बागवानी विभाग

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

- सभी स्कीमों का लाभ पहले आओ और पहले पाओ के आधार पर दिया जाएगा

बागवानी विभाग द्वारा जिले में मशरूम उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न स्कीमों के माध्यम से अनुदान राशि उपलब्ध करवा रहा है। इच्छुक किसान बागवानी विभाग के ऑनलाईन पोर्टल पर अपना रजिस्ट्रेशन करवा सकता है। सभी स्कीमों का लाभ पहले आओ और पहले पाओ के आधार पर दिया जाएगा।

उपायुक्त डॉ. विवेक भारती ने बताया कि एकीकृत बागवानी मिशन के तहत वातानुकुलित मशरूम उत्पादन यूनिट स्थापित करने पर 40 प्रतिशत अनुदान पर 12 लाख रुपये व इसी प्रकार एक मशरूम कम्पोस्ट यूनिट की स्थापना पर भी 12 लाख रुपये का अनुदान दिया जा रहा है। छोटे स्तर पर मशरूम उत्पादन के लिए 50 प्रतिशत अनुदान पर एक लाभार्थी को एक लाख रुपये तक की सहायता प्रदान की जा रही है।

इसके अतिरिक्त अनुसूचित जाति के किसानों के लिए एक मशरूम हट व 100 ट्रे मशरूम उत्पादन के लिए 85 प्रतिशत अनुदान दिया जाता है जिसके तहत दोनों मदें के लिए एक लाभार्थी को 51000 रुपये की सहायता प्रदान की जा रही है।

उन्होंने बताया कि सभी स्कीमों का लाभ लेने के लिए किसान को मशरूम उत्पादन पर किसी भी सरकारी संस्थान/केन्द्र से प्रशिक्षण लेना अनिवार्य है।

युवक पर चाकू से हमला करने का मामला, पुलिस ने दो को किया काबू

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

भट्टू रोड पर एक युवक पर चाकू से जानलेवा हमला करने के मामले में सीआईए फतेहाबाद पुलिस ने दो युवकों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपियों की पहचान मोहित उर्फ माथा पुत्र रमेश कुमार निवासी शिव नगर फतेहाबाद तथा जतिन जग्गा पुत्र गुलशन जग्ग निवासी आर.के. कॉलोनी, बीघड़ रोड फतेहाबाद के रूप में हुई है। आरोपियों से एक मोटरसाइकिल व दो चाकू बरामद किए गए हैं। सीआईए फतेहाबाद प्रभारी उपनिरीक्षक वेदपाल ने बताया कि 28 सितंबर 2025 को सन्नी पुत्र पवन कुमार निवासी रामनिवास मोहल्ला फतेहाबाद अपने दोस्त के साथ मोटरसाइकिल पर सवार होकर लाइफ केयर अस्पताल जा रहा था।

फतेहाबाद। पुलिस गिरफ्त में चाकू से हमला करने के आरोपी।

जब वह मेडिसिटी अस्पताल के पास पहुंचा तो दोनों आरोपी मोहित उर्फ माथा और जतिन जग्गा ने उसका रास्ता रोककर अपने हाथों में लिए चाकू व छुरी से उस पर हमला कर दिया। वारदात के दौरान पीड़ित को पेट, कंधे और बाजू पर गंभीर चोटें आई। घायल सन्नी को पहले सरकारी अस्पताल फतेहाबाद में भर्ती करवाया गया, जहां से उसे अग्रोहा व बाद में उमींद अस्पताल फतेहाबाद रेफर किया गया।

सीआईए की कार्रवाई

थाना शहर फतेहाबाद पुलिस ने पीड़ित के बयान व मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर 29 सितम्बर को आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया था। सीआईए फतेहाबाद टीम ने तत्परता से कार्रवाई करते हुए दोनों आरोपियों को काबू किया तथा उनके कब्जे से एक बाइक व दो चाकू बरामद किए। आरोपियों के आपराधिक रिकॉर्ड अवलोकन से ज्ञात हुआ कि दोनों आरोपी आदतन अपराधी हैं और इनके विरुद्ध विभिन्न गंभीर आपराधिक मामले पहले से दर्ज हैं। आरोपी जतिन जग्गा के विरुद्ध थाना शहर फतेहाबाद में 5 मामले और मोहित उर्फ माथा के खिलाफ थाना शहर फतेहाबाद व महिला थाना फतेहाबाद में 9 मामले दर्ज हैं।

डेरा सच्चा सौदा की प्रेरणा से गुलशन राय मलिक बने शरीरदानी, नम आंखों से दी अंतिम विदाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

शहर की नहर कॉलोनी, गली नंबर 4 निवासी गुलशन राय मलिक के निधन के उपरांत उनके परिवार ने सराहनीय और प्रेरणादायक कार्य करते हुए उनका शरीरदान किया। यह पुण्य कार्य डेरा सच्चा सौदा की शरीरदान मुहिम से प्रेरित होकर किया गया, जो मानवता की सेवा का अनूठा उदाहरण है। गुलशन राय मलिक का पार्थिव शरीर बिजनौर, उत्तर प्रदेश स्थित मेडिकल रिसर्च संस्थान को दान किया गया, जिससे आने वाली पीढियों के चिकित्सक प्रशिक्षण प्राप्त कर सकें और चिकित्सा क्षेत्र को नई दिशा मिल सके। शहर के मुख्य मार्गों से पार्थिव देह को एंबुलेंस द्वारा फूलों से सजी अंतिम यात्रा में ले जाया गया, जिसमें डेरा श्रद्धालुओं और परिजनों ने भावभीनी विदाई दी।

फतेहाबाद। शरीरदानी गुलशन राय मलिक को अंतिम विदाई देते परिजन व डेरा श्रद्धालु। फोटो : हरिभूमि

मानवता भलाई के कार्यों से लाखों लोग प्रेरणा ले रहे

परिजनों में पुत्रवधू राधिका मलिक, प्रीति मलिक, गीता मलिक, तथा पुत्रों तरुण मलिक, साहिल मलिक, अमनदीप ने मिलकर गुलशन राय मलिक को कंधा देकर उन्हें अंतिम विदाई दी। इस अवसर पर डेरा श्रद्धालुओं ने कहा कि डेरा सच्चा सौदा द्वारा चलाए जा रहे मानवता भलाई के कार्यों से लाखों लोग प्रेरणा ले रहे हैं, और यह शरीरदान उसी श्रृंखला की एक अहम कड़ी है। मानवता भलाई के इस अद्वितीय उदाहरण की पूरे फतेहाबाद में सराहना हो रही है। इस अवसर पर रिश्तेदार, सगे संबंधी, डेरा सच्चा सौदा की साध संगत, ग्रीन एस वैलफेयर फोर्स विंग के सेवादार, फतेहाबाद शहर की विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि मौजूद रहे।

फतेहाबाद ट्रैफिक पुलिस ने 13 अवैध बुलेट साइलेंसर जब्त कर मौके पर ही किए नष्ट

- तेज आवाज़ वाले मॉडिफाइड साइलेंसरों से न केवल ध्वनि प्रदूषण होता है

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

फतेहाबाद ट्रैफिक पुलिस ने ध्वनि प्रदूषण के खिलाफ सख्त रुख अपनाते हुए विशेष अभियान चलाया। इस अभियान के तहत शहरभर में मॉडिफाइड बुलेट साइलेंसरों के विरुद्ध कार्रवाई की गई, जिसमें कुल 13 अवैध साइलेंसर जब्त कर मौके पर ही बुलडोजर से नष्ट किए गए। यह कार्रवाई ट्रैफिक प्रभारी उप निरीक्षक जयसिंह के नेतृत्व में की गई। उन्होंने बताया कि इन तेज आवाज़ वाले मॉडिफाइड साइलेंसरों से न केवल ध्वनि प्रदूषण होता है, बल्कि आमजन को मानसिक तनाव, भय व असुविधा का सामना करना पड़ता है। एसपी सिद्धांत जैन ने स्पष्ट रूप से कहा कि वाहनों में ऐसे अवैध संशोधन कतई बर्दाश्त नहीं किए जाएंगे। यदि कोई वाहन चालक भविष्य में इस तरह का साइलेंसर या अन्य अवैध उपकरण लगाकर पकड़ा गया तो उसके खिलाफ भारी जुर्माना, वाहन की जब्ती और कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

फतेहाबाद। मॉडिफाइड बुलेट साइलेंसरों को नष्ट करते ट्रेफिक पुलिस कर्मचारी।

नियमों का करें पालन

एसपी ने आमजन से अपील की कि वे यातायात नियमों का पालन करें और बिना आवश्यकता वाहनों में किसी प्रकार का तकनीकी या ध्वनि संबंधित संशोधन न करें। उन्होंने यह भी कहा कि नशे की हालत में वाहन न चलाएं और सडक़ सुरक्षा को अपनी प्राथमिकता बनाएं। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि पुलिस का उद्देश्य केवल चालान करना नहीं, बल्कि एक सुरक्षित और शांतिपूर्ण यातायात व्यवस्था सुनिश्चित करना है। पुलिस प्रशासन ने नागरिकों से सहयोग की अपील करते हुए कहा कि सभी जिम्मेदार नागरिक बनें, नियमों का पालन करें और सुरक्षित यातायात व्यवस्था बनाए रखने में प्रशासन का साथ दें।

निबंध लेखन में मंजू रही अव्वल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

नेशनल कॉलेज ऑफ एजुकेशन महाविद्यालय में शनिवार को इलैकटोरल लिटरेसी क्लब द्वारा छात्रध्यापकों को मतदान के लिए जागरूक करने के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं करवाई गई। प्राचार्या डॉ. पूनम मिगलानी ने कहा कि हमें मतदान की ताकत को समझना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारे द्वारा निर्वाचित एक सही व ईमानदार प्रतिनिधित्व ही देश को उचाईंयों के पथ पर ले जा सकता है। डेकलामेशन प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल की भूमिका निभाते हुए डॉ. संदीप शर्मा व कुसुमलता ने मंजू, श्रुति व हरशिका को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय विजेता घोषित किया। इसी प्रकार निबंध लेखन प्रतियोगिता में मंजू, अलका व सोनिया को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय विजेता घोषित किया गया।

सिरसा। प्रतियोगिता में भाग लेती प्रतिभागी। फोटो : हरिभूमि

इस प्रकार रहे परिणाम

पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल डॉ. वंदना व मीनू वर्मा ने सृष्टि, हिमानी व मंजू को को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय विजेता घोषित किया। इसी प्रकार मेंहदी प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल प्रेमलता, डॉ. वंदना व मीनू वर्मा ने सृष्टि, मंजू व अलका को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय विजेता घोषित किया तथा सोनी को सांत्वना पुरूस्कार दिया गया। इंचार्ज नीलम वर्मा ने कहा कि प्रत्येक नागरिक को अपनी समझ व सूझबूझ का प्रयोग करके ही मतदान करना चाहिए तभी हमारा देश प्रगति की पथ की ओर अग्रसर हो सकेगा। इस अवसर पर शिक्षक व गैर शिक्षक वर्ग मौजूद थे।

जिला युवा महोत्सव 27 और 28 अक्टूबर को, पंजीकरण के लिए 24 तक आवेदन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

कौशल विकास एवं औद्योगिक प्रशिक्षण विभाग हरियाणा के तत्वावधान में जिला स्तरीय युवा महोत्सव का आयोजन आगामी 27 व 28 अक्टूबर को किया जाएगा, जिसमें पंजीकरण के लिए युवा 24 अक्टूबर तक आवेदन कर सकते हैं। यह आयोजन जिले के युवाओं को कला, साहित्य, संगीत और विज्ञान के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का सुनहरा अवसर प्रदान करेगा। उपायुक्त डॉ. विवेक भारती ने बताया कि जिला स्तरीय महोत्सव में भाग लेने के लिए प्रतिभागी हरियाणा राज्य के स्थायी निवासी या किसी भी शैक्षणिक संस्थान के विद्यार्थी होने चाहिए, जिनकी आयु 1 सितंबर, 2025 तक 15 से 29 वर्ष के बीच हो। प्रत्येक प्रतिभागी केवल एक ही प्रतियोगिता श्रेणी में भाग ले सकेगा। आवेदन के लिए प्रतिभागी को रजिस्ट्रेशन फॉर्म के साथ 10वीं की मार्कशीट, आधार कार्ड, फैमिली आईडी, फोटो व बैंक खाता की प्रति लाना अनिवार्य हैं।

जिला युवा महोत्सव प्रतियोगिताएं घोषित

जिला स्तरीय युवा महोत्सव के अंतर्गत साइंस मेला समूह व एकल, लोक नृत्य, लोक गीत, कहानी लेखन, कविता लेखन, पोस्टर मेकिंग, भाषण प्रतियोगिता तथा लोक संगीत वाद्य प्रतियोगिता समूह व एकल जैसी विभिन्न विधाओं का आयोजन किया जाएगा। प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को क्रमशः 31000 रुपये, 21000 रुपये और 11000 रुपये समूह विधाओं के लिए तथा 3100 रुपये, 2100 रुपये और 1100 रुपये एकल विधाओं के लिए की पुरस्कार राशि प्रदान की जाएगी। उपायुक्त ने बताया कि साइंस मेला विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नवाचार विषय पर आयोजित होगा, जिसमें प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाली टीमों को राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में जिले का प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिलेगा। जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी राज्य स्तर के लिए और राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी राष्ट्रीय स्तर पर चयनित होंगे।

जागरुकता अभियान | एसपीओ ने बच्चों को क्रिकेट खेलकर नशे से तौबा करने की शपथ दिलाई

पुलिस ने ओढ़ा में खेल प्रतियोगिता के माध्यम से युवाओं को नशे के खिलाफ किया एकजुट

हरिभूमि न्यूज ▶▶ ओढां

जन जागरूकता अभियान के तहत पुलिस ने ओढ़ा में स्थित खेल मैदान में पहुंचकर युवा शक्ति को खेलों से जोडक़र उन्हें नशे जैसी बुराई से दूर रहने के लिए प्रोत्साहित किया। एसपीओ हरगोबिंद ने बच्चों को क्रिकेट खेलकर उन्हें नशे जैसे बीमारी से तौबा करने की शपथ दिलाई व खेलों के माध्यम से अपने माता पिता व अपने गांव व शहर का नाम रोशन करने के लिए जागरूक किया। उन्होंने आमजन से सहयोग की अपील करते हुए कहा कि आमजन नशा तस्करों व नशा पीड़ितों की सूचना देकर उनका इलाज समय से शुरू करवा सकते हैं ताकि वे समाज की मुख्य धारा में जुड़ कर नशा मुक्त अभियान में अपनी भागीदारी निभाएं व अन्य लोगों के लिए एक मिसाल कायम करें।

सिरसा। खेल मैदान में बच्चों को जागरूक करते एसपीओ हरगोबिंद।

नशा अपराधों का जन्मदाता

एसपीओ ने कहा कि अकेला नशा कई बीमारियों व अपराधों को जन्म देता है। इसलिए यह अति आवश्यक है कि युवा इसके दुष्प्रभावों को पहचाने व इस गर्त से जितना हो सके उतना दूर रहें व इस संदेश को अपने परिवार व समाज तक पहुंचाएं। उन्होंने युवाओं से कहा कि हम आपके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं और उम्मीद करते हैं कि आप भविष्य में देश का नाम रौशन करोगे और युवाओं के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत बनोगे। उन्होंने कहा कि अगर उनके क्षैत्र में कोई नशा तस्करी, नशा बेचने का कार्य करता है तो वे नशा से संबंधित शिकायतों के लिए राष्ट्रीय नारकोटिक्स हेल्पलाइन नंबर 1933 पर काल करें।

खबर संक्षेप

आश्वासन के बाद किसानों का धरना स्थगित

सिरसा। ओटू हैड पर पिछले चार दिनों से चल रहा किसानों का धरना अधिकारियों के आश्वासन के बाद स्थगित कर दिया गया है। सिंचाई विभाग के अधिकारियों से बातचीत के बाद किसानों ने यह निर्णय लिया। सिंचाई विभाग के एक्शन संदीप शर्मा और एसडीओ रघुवीर शर्मा मौके पर पहुंचे। उन्होंने किसानों से बातचीत की। जिसके बाद किसानों ने धरना समाप्त करने पर सहमति जताई। किसानों की मुख्य मांगों में साउथ घग्घर कैनाल और ढाणी शेरां फलडी माइनर में सेम के पानी की जगह घग्घर नदी का पानी डालना शामिल था।

26 को हिसार में मनाई जाएगी नामदेव जयंती

सिरसा। नामदेव सभा हरियाणा के प्रदेशाध्यक्ष व पूर्व चेयरमैन सतबीर वर्मा ने बताया कि संत शिरोमणि नामदेव जयंती आगामी 26 अक्तूबर को गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय में धूमधाम से मनाई जाएगी, जिसमें बतौर मुख्यातिथि प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी शिरकत करेंगे। जयंती समारोह का निमंत्रण देने सभा के पदाधिकारी सिरसा पहुंचे। नामदेव सभा के सदस्य सुरेश रोहिल्ला ने प्रदेशाध्यक्ष को सहयोग राशि का चैक भेंट किया। नगर पार्षद मुकेश रोहिल्ला ने मंच संचालन किया। इस मौके पर गंगाधर वर्मा, रामनिवास, रामशेर रोहिल्ला, राजबीर रोहिल्ला, डॉ. सुभाष वर्मा, विक्रम रोहिल्ला, राजकुमार रोहिल्ला, प्रदीप रोहिल्ला, ललित छिंपा, मुख्त्यार सिंह ओढां व अन्य मौजूद रहे।

वाहन खरीदने के लिए कर में राहत की मांग

सिरसा। विकलांग संघ उमंग के प्रदेशाध्यक्ष बंसी लाल झोरड़ ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर दिव्यांगजन को रियायती जीएसटी दरों पर वाहन खरीदने की सुविधा जारी रखने की मांग की है। उन्होंने बताया कि जीएसटी दरों के बदलाव से पहले दिव्यांगजन को 18 प्रतिशत की रियायती जीएसटी दर पर वाहन खरीदने की सुविधा थी जबकि सामान्यजन के लिए यह जीएसटी दर 28 प्रतिशत थी। हाल ही में जीएसटी बदलाव करने पर सामान्यजन को भी 28 प्रतिशत की दर वाले वाहन 18 प्रतिशत जीएसटी की दर पर उपलब्ध है। ऐसे में दिव्यांगजन के लिए रियायती जीएसटी दरों पर वाहन सुविधा खरीदने की सुविधा को बंद कर दिया गया है।

साझी दीवार को लेकर विवाद, आरोपी काबू

फतेहाबाद। गांव समैण में साझी दीवार को लेकर दो पड़ोसियों के बीच चल रहे विवाद में घर में घुसकर हमला करने पर पुलिस ने तीसरे युवक को काबू किया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान प्रवीण पुत्र कृष्ण कुमार निवासी समैण के रूप में हुई है। इससे पहले दो आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका है। थाना सदर टोहाना प्रभारी उपनिरीक्षक शादी राम ने बताया कि गांव समैण निवासी असलम पुत्र चिरागदीन ने शिकायत दी थी कि 20 अगस्त को साझा दीवार को लेकर पड़ोसी संदीप उर्फ मोनी, कुलदीप, प्रवीण, सोनू व विनोद के साथ विवाद हो गया था। इस दौरान संदीप और कुलदीप हथियार लेकर घर में घुस गए और हमला कर दिया।

सड़क हादसे में युवक की मौत मामले में एक काबू

फतेहाबाद। सड़क हादसे के एक मामले में टोहाना पुलिस ने आरोपी ट्रैक्टर चालक को काबू किया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान मुनेश पुत्र धरमबीर सिंह निवासी राजगढ़ धोबी, तहसील नरवाना, जिला जींद के रूप में हुई है। थाना शहर टोहाना प्रभारी निरीक्षक प्रहलाद ने बताया कि 26 सितंबर को गांव लालोदा निवासी रामधारी उर्फ लीलूराम ने शिकायत दी थी कि वह अपने भाई सतबीर सिंह के साथ गाड़ी में गांव डांगरा की ओर जा रहा था। जब वे सनियाणा-टोहाना रोड पर बिढाई खेड़ा बस स्टैंड के पास पहुंचे, तो खेतों से एक ट्रैक्टर चालक तेज रफ्तार और लापरवाही से आया और उनकी गाड़ी में टक्कर मार दी। इस हादसे में सतबीर सिंह को गंभीर चोटें आई थी।

गोसेवक बोले-गोवंश को बचाना बना चुनौती

गोशाला की दुर्दशा : 300 से अधिक गोवंश भुखमरी के कगार पर, सहायता की गुहार

श्री कृष्ण गौशाला इन दिनों गंभीर आर्थिक संकट से गुजर रही, गोभक्त परेशान

हरिभूमि न्यूज ▸▸ भट्टूकलां

भट्टूकलां। गांव ढुईयां गौशाला में चारा खाती गायें। फोटो : हरिभूमि

भट्टू खंड के गांव ढुईयां में स्थित स्वामी सदानंद चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री कृष्ण गौशाला इन दिनों गंभीर आर्थिक संकट से गुजर रही है। इस गौशाला में करीब 300 गोवंश का पालन किया जा रहा है, लेकिन संसाधनों की भारी कमी और लगातार बिगड़ती आर्थिक हालत के कारण यह गोवंश अब भुखमरी के कगार पर पहुंच चुका है। गौशाला समिति के प्रधान ओमप्रकाश मल्हान, सज्जन बेनीवाल, सचिव कुलविंद्र व अन्य ग्रामीणों ने अपनी पीड़ा साझा करते हुए बताया कि गौशाला में संसाधनों की बेहद कमी है। यह गौशाला ढुईयां और दैय्यड़ गांव के गोवंश को आश्रय प्रदान करती है, लेकिन अब चारे का संकट गहराता जा रहा है।

समिति के सदस्यों के अनुसार, गौशाला में सि एक ही गोदाम है, जिसका उपयोग आमतौर पर सर्दियों में गौमाताओं के रैन बसेरे के रूप में किया जाता है। ऐसे में चारे का उचित भंडारण नहीं हो पाता, और जो भी चारा इक_ा किया जाता है, वह बरसात और सीलन के कारण सड़ जाता है। पिछले वर्ष एकत्रित की गई तुड़ी की बड़ी मात्रा अब पूरी तरह से सड़कर दुर्गंध देने लगी है, और वह अब गोवंश के खाने योग्य भी नहीं रह गई है।

नहीं मिल रही आर्थिक सहायता

गौशाला कमेटी के सदस्यों का कहना है कि वे प्रशासन, जिला परिषद और यहां तक कि मुख्यमंत्री तक अपनी गुहार पहुंचा चुके हैं, लेकिन अब तक कोई ठोस मदद नहीं मिली। ऐसे में न केवल गोवंश संकट में हैं, बल्कि गौसेवकों की मानसिक स्थिति भी इस अव्यवस्था के कारण खराब होती जा रही है। गौशाला समिति ने आसपास की आर्थिक रूप से मजबूत गौशालाओं और गौभक्तों से सहयोग की अपील की है। उनका कहना है कि यदि आसपास की गौशालाएं और धार्मिक संस्थाएं थोड़ा-थोड़ा भी सहयोग करें, तो इन 300 गोवंशों को संकट से बचाया जा सकता है।

आज भूख से तड़फ रहा गोवंश

गौशाला प्रधान ओमप्रकाश मल्हान ने कहा कि गौ माता हमारी संस्कृति और आस्था का प्रतीक हैं, पर आज वे भूख से तड़प रही हैं। प्रशासन को अविलंब सहायता पहुंचानी चाहिए। इस बारे में गौशाला के जिला प्रधान अशोक भूकर ने बताया कि स्थिति वास्तव में ही दयनीय है इस बारे में सरकार को दो-तीन बार अवगत करवा दिया है शीघ्र ही अब संबंधित विभाग से मिलकर इसका समाधान निकाला जाएगा।

बारिश व सेम के कारण हालात बिगड़े

ग्रामीणों ने बताया कि पिछले तीन-चार वर्षों से गांवों में लगातार बारिश और सेम की वजह से खेती को भारी नुकसान हुआ है। किसान खुद भोजन और आजीविका के संकट से जूझ रहे हैं, जिससे गौशाला को मिलने वाला सहयोग भी रुक गया है। इस कारण गौशाला की आर्थिक हालत लगातार बिगड़ती जा रही है।

15 पशु अस्पतालों में हुआ लाइव प्रसारण

पीएम धन-धान्य कृषि योजना के शुभारंभ

फतेहाबाद। पशु अस्पताल शेखुपुर दड़ौली में सीधा प्रसारण देखते पशुपालक।

हरिभूमि न्यूज ▸▸ फतेहाबाद

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किसानों एवं पशुपालकों के हित में पीएम धन-धान्य कृषि योजना का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर फतेहाबाद जिले के पशुपालन विभाग के 15 पशु अस्पतालों को चयन किया गया, जहां पर पशुपालकों को योजना का सीधा प्रसारण एलईडी स्क्रीन के माध्यम से दिखाया गया। उपनिदेशक पशुपालन डॉ. सुखविंदर ने बताया कि यह कृषि योजना किसानों के लिए मील का पत्थर साबित होगी। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत प्रतिवर्ष 24,000 करोड़ रुपये का बजट निर्धारित किया गया है।

किसानों को फायदा

इस अवसर पर पशु चिकित्सक डॉ. रामनिवास बिश्नोई ने बताया कि इस योजना से लगभग 1.7 करोड़ किसानों को लाभ मिलने का अनुमान है। योजना के पहले चरण में 100 कृषि जिलों का चयन किया गया है, जिनमें किसानों को आधुनिक तकनीक अपनाने और आय दोगुनी करने के अवसर प्रदान किए जाएंगे। इस मौके पर वीएलडीए अनिल, जगतपाल, रतन सिंह, पवन कुमार सहित अनेक पशुपालक उपस्थित रहे।

स्टेट चैंपियनशिप में जीता गोल्ड

हरिभूमि न्यूज ▸▸ सिरसा

सिरसा। गोल्ड मेडल विजेता हरमन को सम्मानित करते।

38वीं जूनियर एथलेटिक्स स्टेट चैंपियनशिप में ओढां निवासी हरमन पुत्री भोला सिंह ने अपनी रफ्तार से विरोधियों को परास्त करते हुए 3 हजार मीटर रेस में गोल्ड मेडल जीतकर अपना, अभिभावकों व जिले का नाम रोशन किया। यही नहीं हरमन अब नैशनल के लिए उड़ीसा में जाकर अपनी रफ्तार का प्रदर्शन करेंगी। बेटी के शानदार प्रदर्शन पर यूथ कांग्रेस के जिलाध्यक्ष गोबिंद सिंह सहित ओढां से अनेक समाजसेवियों, क्लब पदाधिकारियों, ओढां ग्राम पंचायत से संदीप, शहीद उधम सिंह क्लब, जिला परिषद मेंबर गुरप्रीत, सतनाम कुंडर, केवल मलान, हीरा कुंडर, एचएसजीपीसी सदस्य अमृतपाल, एनजीजीएस कंप्यूटर सेंटर ओढां,

ओढां निवासी हरमन को सराहा

गांवों में प्रतिभाओं की कमी नहीं : ओढां

गोबिंद सिंह ओढां ने कहा कि ग्रामीणांचल में प्रतिभाओं की कमी नहीं है। अगर युवाओं को बेहतर मंच मिले तो ग्रामीण युवा भी अपनी प्रतिभा का खुलकर प्रदर्शन कर अपना भविष्य स्वर्णिम बना सकते हैं। उन्होंने कहा कि हरमन सामान्य परिवार से है और बेटी के मन में सपने बड़े हैं। ऐसे में हम सभी का फर्ज बनता है कि जो भी मदद इस होनहार बेटी की हो सके, की जाए, जिससे वो अपने सपनों को पंख लगा सके। गांव नुहियांवाली में स्थित बिमला देवी स्पोर्ट्स एकेडमी के एनआईएस कोच मनीष सरस्वां ने बताया कि हरमन में प्रतिभा की कमी नहीं है। वह अपनी मेहनत के दम पर बहुत आगे जाएगी।

महिला से अशोभनीय हरकत करने वाला युवक को गिरफ्तार

फतेहाबाद। महिला से अशोभनीय हरकत करने के मामले में भूना पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान अजय पुत्र पवन कुमार निवासी वार्ड नं. 04, नजदीक किशोरी डिपो, भूना, जिला फतेहाबाद के रूप में हुई है। थाना भूना प्रभारी उपनिरीक्षक ओमप्रकाश ने बताया कि थाना भूना में एक महिला ने शिकायत दर्ज कराई थी कि उसका बेटा अजय नशे का आदी है और नशे की हालत में घर में उत्पात मचाता है। शिकायतकर्ता ने बताया कि आरोपी नशे के लिए पैसे मांगता है और मना करने पर अपने माता-पिता से मारपीट करता है। महिला ने बताया कि 10 अक्टूबर की सुबह लगभग 8:30 बजे जब उसका पति घर पर नहीं था, तब आरोपी अजय घर आया और अपने कपड़े उतारकर अश्लील इशारे करने लगा। महिला ने तुरंत थाना भूना में शिकायत दी।

प्रधानमंत्री ने देश के किसानों को बड़ी सौगातें दीः शीशपाल कंबोज

हरिभूमि न्यूज ▸▸ रानियां

सिरसा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लाइव कार्यक्रम में उपस्थित लोग।

शहर की अनाज मंडी में शनिवार को मार्केट कमेटी प्रशासन द्वारा पीएम धन-धान्य कृषि योजना और दलहन आत्मनिर्भरता मिशन के शुभारंभ का लाइव प्रसारण किया गया। कार्यक्रम में पूर्व भाजपा के जिलाध्यक्ष शीशपाल कंबोज ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज 42000 से भी ज्यादा करोड़ रुपये की 1100 से भी अधिक परियोजनाओं का एक साथ शुभारंभ कर देश के किसानों को बड़ी सौगात दी है। जीएसटी की दरें घटाने से लोगों को फायदा मिल रहा है।

पीएम धन-धान्य कृषि योजना को लेकर कार्यक्रम का आयोजन

पूर्व विधायक व वरिष्ठ पदाधिकारी मौजूद रहे

इस अवसर पर पूर्व विधायक रामचंद कम्बोज, भाजपा के जिला सचिव अमरीक सिंह राही, मार्केट कमेटी के चेयरमैन ललित पोपली, सचिव सुरेन्द्र सैन, आढ़ती एसोसिएशन के प्रधान महेश फुटेला, पूर्व प्रधान सोमप्रकाश, भाजपा मंडल अध्यक्ष वीरेन्द्र छपोला, रणमाल बालासर, सुरेश कम्बोज,संजय सिंगला,आदि मौजूद रहे।

संगम स्कूल में हुई स्वास्थ्य जागरूकता कार्यशाला

हरिभूमि न्यूज ▸▸ सिरसा

गांव भरोखां के संगम स्कूल में बच्चों के सर्वांगीण विकास और स्वास्थ्य के उद्देश्य से शनिवार को एक विशेष स्वास्थ्य जागरूकता कार्यशाला हुई। इस कार्यशाला में बतौर मुख्य वक्ता स्पीच एंड बिहेवियर थैरेपिस्ट डॉ. चांदनी मित्रा तथा बाल स्वास्थ्य विशेषज्ञ डॉ. अंकित मित्रा ने भाग लिया। डॉ. चांदनी मित्रा ने स्पीच थेरेपी, ऑक्यूपेशनल थेरेपी और बिहेवियर थेरेपी के महत्व पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आजकल छोटे बच्चों में बोलने में विलंब, व्यवहारगत कठिनाइयां और सीखने से जुड़ी समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं, परंतु इनका समुचित उपचार संभव है, बशर्ते इनका निदान प्रारंभिक अवस्था में कर लिया जाए।

बच्चों के विकास के प्रति संवेदनशील रहें

उन्होंने अभिभावकों से अपील की कि वे बच्चों के व्यवहार और विकास के प्रति संवेदनशील रहें और किसी भी असामान्यता की स्थिति में तुरंत विशेषज्ञ से परामर्श लें। डॉ. अंकित मित्रा ने बच्चों के संतुलित आहार पर विशेष जोर दिया। उन्होंने कहा कि बच्चों में एनीमिया एक आम समस्या बनती जा रही है, जिसे संतुलित भोजन से दूर किया जा सकता है। उन्होंने अभिभावकों को सलाह दी कि वे बच्चों के भोजन में हरी पत्तेदार सब्जियां, दालें, फल, दूध और पौष्टिक खाद्य पदार्थों को नियमित रूप से शामिल करें।

गर्ग के समर्थन में उतरे शहर के व्यापारी

हरिभूमि न्यूज ▸▸ सिरसा

सिरसा। व्यापारियों के साथ मिटिंग करते व्यापार मंडल के जिलाध्यक्ष हीरालाल शर्मा।

व्यापारियों की बैठक हुई, जिसमें फतेहाबाद व टोहाना में नगर परिषद द्वारा बिना नोटिस दिए दुकानों के शटर तोड़ने की कड़ी निंदा की है। बैठक को संबोधित करते हुए हरियाणा प्रदेश व्यापार मंडल के जिला प्रधान हीरालाल शर्मा ने कहा कि नगरपरिषद के एक सरकारी अधिकारी ने निजी स्वार्थ के चक्कर में बिना नोटिस दिए फतेहाबाद व टोहाना में दुकानों के शटर तोड़ दिए। यहां तक की बिना बिजली विभाग के बिजली की तारें तोड़ कर बिजली काट दी।

उन्होंने कहा कि विभाग की इस कार्रवाई में किसी बड़े जान माल का नुकसान भी हो सकता था। ऐसे अधिकारी अपने निजी स्वार्थ के लिए सरकार व व्यापारियों में टकराव करवाना चाहते हैं। हीरालाल शर्मा ने कहा कि एक सरकारी अधिकारी ने अपनेउपर कार्रवाई होते देखकर व्यापार मंडल के प्रांतीय अध्यक्ष बजरंग गर्ग पर झूठी कार्रवाई करने का दबाव बनाने में लगा हुआ है। जबकि हरियाणा ही नहीं, पूरे देश का व्यापारी बजरंग दास गर्ग के साथ खड़ा है।

बोले-अधिकारी सरकार व व्यापारियों का टकराव करवा रहे

भ्रष्ट अधिकारियों पर कार्रवाई की मांग

बजरंग गर्ग ने कहा था कि हम ईमानदार अधिकारियों के साथ हैं, उनकी इज्जत करते हैं और भ्रष्ट अधिकारियों के पहले भी खिलाफ थे और हमेशा खिलाफ रहेंगे। इस मौके पर अंजनी कनोडिया, अनिल सर्राफ, कीर्ती गर्ग, अश्वनी बांसल, भीम सिंगला, देवेंद्र डाबा, प्रवीण मेहिपाल, नरेश जिंदल, अमित नाबा, नरेश जिंदल नोटू, सुमित गुप्ता, हीरा लाल गर्ग, संदीप मिढ़ा, हेमंत गुप्ता सहित सभी कोर कमेटी सदस्य मौजूद रहे।

ऑनलाइन फ्रॉड प्रकरण, जाखल पुलिस ने राजस्थान के युवक को पकड़ा

हरिभूमि न्यूज ▸▸ फतेहाबाद

साइबर अपराधों के विरुद्ध चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत थाना जाखल पुलिस ने ऑनलाइन ठगी के मामले में एक अन्य आरोपी को काबू किया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान सुखदेव सिंह उर्फ बिंटू पुत्र मदन सिंह निवासी कोलगांव, जिला खड़वाल, राजस्थान के रूप में हुई है। आरोपी से 10 हजार रुपये की नकदी बरामद की गई है। इससे पहले इसी मामले में दो अन्य आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका है। मामले की जांच के दौरान थाना जाखल पुलिस ने साइबर तकनीकी विश्लेषण के आधार पर आरोपी सुखदेव सिंह उर्फ बिंटू को राजस्थान से काबू किया।

पुलिस ने आरोपी से दस हजार रुपये किए बरामद

ये है मामला

थाना जाखल प्रभारी उपनिरीक्षक सुरेश ने बताया कि शिकायतकर्ता राकेश पुत्र कृष्ण निवासी ढाणी सांचला, तहसील टोहाना, जिला फतेहाबाद ने पुलिस को दिए बयान में बताया कि 7 नवंबर 2024 को उसके पास एक व्यक्ति ने मोबाइल से कॉल की और कहा कि उसके रिश्तेदार सुरजीत का एक्सीडेंट हो गया है, जिसके इलाज के लिए तुरंत पैसों की आवश्यकता है। कॉल करने वाले ने झांसा देकर राकेश से 27 हजार रुपये फोन पे के माध्यम से अपने खाते में ट्रांसफर करवा लिए। बाद में राकेश ने जब अपने असली रिश्तेदार से संपर्क किया तो

जागरूकता महिला एवं बाल विकास विभाग ने दी जानकारी

डूल्ट में महिलाओं को मासिक धर्म स्वच्छता के प्रति किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज ▸▸ भूना

भूना। डूल्ट गांव में महिलाओं और किशोरियों के लिए मासिक धर्म स्वच्छता को लेकर जागरूक करती सुपरवाइजर स्वीटी।

पोषण माह के तहत डूल्ट गांव में महिलाओं और किशोरियों के लिए मासिक धर्म स्वच्छता जागरूकता अभियान चलाया गया। इस अभियान का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता के महत्व के प्रति जागरूक करना और स्वास्थ्य संबंधी जोखिमों से बचाना रहा। कार्यक्रम का संचालन महिला एवं बाल विकास विभाग की सुपरवाइजर स्वीटी द्वारा किया गया। उन्होंने उपस्थित महिलाओं और किशोरियों को मासिक धर्म के दौरान अपनाई जाने वाली स्वच्छता आदतों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इन दिनों शरीर को हाइड्रेटेड रखना जरूरी है, इसलिए भरपूर मात्रा में पानी पिएं और जंक फूड से दूरी बनाए रखें। उन्होंने महिलाओं को यह भी समझाया कि यदि मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता का ध्यान नहीं रखा जाए,

योजना की दी जानकारी

स्वच्छता न रखने पर कई बार यह गंभीर बीमारियों और संक्रमण का कारण बन सकता है इसलिए जरूरी है कि महिलाएं और किशोरियां इन बातों को नजरअंदाज न करें और समय रहते जागरूक बनें। सुपरवाइजर ने विभाग द्वारा चलाई जा रही 'महिला एवं किशोरी सम्मान योजना' के बारे में भी जानकारी दी। गांव की महिलाओं ने इस पहल की सराहना की और कहा कि ऐसे जागरूकता कार्यक्रम समय-समय पर चलते रहने चाहिए।

उत्साह और उत्सव का अद्भुत समावेश देखने को मिला

हरिभूमि न्यूज ▸▸ सिरसा

तनिष्क द्वारा आयोजित "मृगांका कलेक्शन लॉन्च एवं ब्राइडल एलेगेंस इवेंट" ने शहर में आकर्षण और उत्साह का नया रंग भर दिया। यह आयोजन सिरसा की फैशन प्रेमी महिलाओं के लिए एक यादगार अनुभव साबित हुआ, जिसमें ग्लैमर, एलीगेंस और परंपरा का अनोखा मेल देखने को मिला। मेहमानों ने नई ज्वेलरी कलेक्शन को नजदीक से देखा, डिजाइनर्स से बातचीत की और विभिन्न ब्राइडल सेट्स को ट्राय किया। पूरे माहौल में उत्साह और उत्सव का अद्भुत समावेश देखने को मिला।

मृगांका कलेक्शन लॉन्च एवं ब्राइडल एलेगेंस इवेंट आयोजित

तनिष्क सिरसा में फैशन और एलेगेंस का शानदार संगम

सिरसा । कार्यक्रम में उपस्थित अतिथिगण।

फैशन स्टाइलिस्ट बंडिता पात्रो ने शोभा बढ़ाई

इस खास अवसर पर मुंबई से आईं जानी-मानी फैशन स्टाइलिस्ट बंडिता पात्रो ने अपनी उपस्थिति से आयोजन की शोभा बढ़ाई। उन्होंने ब्राइडल स्टाइलिंग और लेटेस्ट फैशन ट्रेंड्स पर एक शानदार सत्र प्रस्तुत किया, जिसने सभी को प्रभावित किया। उनके विचारों ने यह दर्शाया कि आज की आधुनिक दुल्हन आत्मविश्वास, शालीनता और परंपरा-तीनों का सुंदर मेल अपने रूप में चाहती है, और मृगांका कलेक्शन इसी सोच को साकार करता है। कार्यक्रम के दौरान स्टोर को आकर्षक सजावट, मनमोहक रोशनी और सौम्य संगीत से सजाया गया था।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक, रविवार 12 अक्टूबर 2025

दीपावली सदियों से धार्मिक और सांस्कृतिक पर्व के रूप में मनाई जा रही है। लेकिन अब इसका स्वरूप राष्ट्रीय, आर्थिक और भावनात्मक एकता का रूप ले चुका है। दीपावली की चमक अब केवल तेल के दीयों में नहीं रही बल्कि डिजिटल स्क्रीन, वैश्विक समारोहों, आर्थिक गतिविधियों में भी हर जगह भारत की सांस्कृतिक शक्ति के रूप में झिलमिलाती है।

धर्म-संस्कृति-आस्था के साथ अर्थव्यवस्था का महापर्व दीपावली

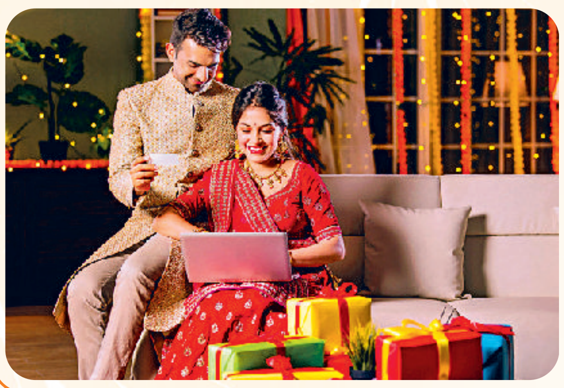

आवरण कथा

शैलेंद्र सिंह

दीपावली अगर पहले के दौर में केवल दीप और पूजा का पर्व था, तो आज यह डिजिटल भारत की संपन्नता और सशक्ति का प्रतीक बन चुकी है। आज हर राज्य, हर भाषा और हर वर्ग के लोग अलग-अलग तरीके से दीपावली को जोरदार तरीके से सेलिब्रेट कर रहे हैं। यह भारत के किसी भी अखिल भारतीय उत्सव का सबसे बड़ा सिंबल है। एक जमाना था, जब गांवों में मिट्टी के दीयों से रोशनी की कतार झिलमिलाती थी। आज उत्तर हो या दक्षिण, पूर्व हो या पश्चिम, देश के सभी शहरों में एलईडी की इंद्रधनुषी झालरें दीपावली के मौके पर संपन्नता की अठखेलियां करती हैं। साथ ही ऑनलाइन दुनिया में डिजिटल ग्रीटिंग्स की भरमार है। दरअसल, दिवाली अब हमारे आर्थिक, सांस्कृतिक वजूद का इंजन बन चुकी है।

होगी कई लाख करोड़ की खरीदारी

दीपावली अब केवल आस्था का त्योहार नहीं बल्कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का महापर्व है। यकीन न आए तो कुछ आंकड़ों पर गौर कर सकते हैं। साल 2024 की दीपावली तिमाही में खरीदारी तकरीबन 4.5 लाख करोड़ तक पहुंच गई थी। इस साल अनुमान है कि यह आंकड़ा 6 लाख करोड़ तक पहुंचेगा। मतलब बिहार जैसे राज्य के लगभग दो सालों का समूचा सालाना बजट के बराबर दिवाली के मौके पर खरीदारी में खर्च हो जाएगा। अकेले ई-कॉमर्स सेक्टर में ही दीपावली के आस-पास अब तक 90 हजार करोड़ की ऑनलाइन बिक्री हो चुकी है। उम्मीद है कि यह तकरीबन पौने दो से दो लाख करोड़ तक पहुंचेगी। ऑटो मोबाइल्स, रियल एस्टेट, इलेक्ट्रॉनिक और ज्वेलरी जैसे क्षेत्र में इस सीजन बिक्री के नए मानदंड रचे जाने हैं। मतलब यह कि दिवाली अब भारतीय अर्थव्यवस्था की धड़कती नब्ज बन चुकी है।

डिजिटल कंपनियों को भी रहता है इंतजार

यह त्योहार अब केवल धार्मिक नहीं, आर्थिक और सांस्कृतिक एकता का भी बड़ा अवसर बन चुका है। आज दीपावली एक किसान से लेकर स्टार्टअप फाउंडर तक के लिए आर्थिक रोशनी की नई उम्मीद बनकर आती है। इस डिजिटल युग में दीपावली सिर्फ घरों या मंदिरों तक नहीं सीमित बल्कि सोशल मीडिया, डिजिटल क्रिएटिविटी और तकनीकी नवाचार का त्योहार बन गई है। 'हैप्पी दीपावली' कहना या लिखना, हर साल दुनियाभर के ट्रेंडिंग टॉपिक्स में शामिल रहने वाला सबसे हॉट विषय होता है। गूगल और एप्पल जैसी कंपनियां दीपावली का महीनों पहले से इंतजार करती हैं। इस मौके पर विशेष डूडल और थीम्स जारी करती हैं। डिजिटल आर्टिस्ट और कंटेंट क्रिएटर्स दीपावली को भारतीय पहचान का वैश्विक प्रतीक मानते हैं। भारत के स्टार्टअप इस मौके पर विशेष फेस्टिव कैंपेन लांच करते हैं जैसे- मेड इन इंडिया जिसमें एक नया संदेश छिपा होता है। कहने का मतलब यह कि दीपावली अब घर-घर की नहीं बल्कि स्क्रीन-स्क्रीन की रोशनी बन चुकी है और पूरे भारत को एक डिजिटल सांस्कृतिक धारा में जोड़ रही है।

बन चुका है ऑल इंडिया फेस्टिवल

आज दीपावली भाषा और क्षेत्र की सीमाओं से परे जा चुकी है। जहां पहले लोग कहते थे कि हर राज्य अपने-अपने तरीके से दीपावली मनाता है, वहीं अब देखा जा रहा है कि यह संपूर्ण भारत का एक साझी रंगत वाला त्योहार बन चुका है। मॉल्स, कालोनियां, ऑफिसेस, हाउसिंग सोसायटी आदि सब जगह दीपावली के अखिल भारतीय सेलिब्रेशन के दर्शन होते हैं। आज दिवाली भाषा, धर्म, क्षेत्र और वर्ग की सीमाओं को लांघकर अखिल भारतीय उत्सव बन चुकी है, जो सभी भारतीयों को एक साझा पहचान देती है।

विदेशों में भी जगमगाती दीपावली

आज दुनिया में ब्रांड इंडिया की चमक का एक हिस्सा जगमग दीपावली भी है। भारत को वैश्विक ब्रांड के रूप में देखें तो दीपावली उसकी सिग्नेचर इमोशन बन चुकी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर न्यूयॉर्क, लंदन, दुबई और सिंगापुर में इंडियन दिवाली नाइट आयोजित होती हैं। बुर्ज खलीफा पर भारतीय दिवाली की लाइट शो अब हर साल की परंपरा है। व्हाइट हाउस में, ब्रिटिश पार्लियामेंट और कनाडा में, लेचिसलेचर और दीपावली के दीये जलाना अब ग्लोबल सॉफ्टपावर का प्रतीक है। जरा गौर कीजिए इन आयोजनों के केंद्र में सिर्फ धार्मिकता नहीं होती बल्कि भारतीय आधुनिकता, बहुलता और सांस्कृतिक आत्मविश्वास के दर्शन होते हैं। यह वही आत्मविश्वास है, जो बताता है कि भारत अपनी परंपरा को 21वीं सदी के फ्रेम में फिट करने में सक्षम है।

आधुनिकता-आर्थिक संपन्नता का प्रतीक

देश के हर क्षेत्र में व्यापारिक गतिविधियों की चरम स्थिति, छोटे दुकान से लेकर ई-कॉमर्स के दिग्गज तक दीपावली को अपनी ताकत से जोड़ते हैं। इस तरह यह एक फेस्टिवल टेक्नोलॉजीकरण भी है। डिजिटल पेमेंट, ई-गिफ्ट और सोशल मीडिया ने त्योहार को एक साझा राष्ट्रीय अनुभव बना दिया है। इसलिए दीपावली अब भारत का कल्चरल एक्सपोर्ट बन चुकी है, जो भारतीय प्रवासियों के माध्यम से विश्व स्तर पर मनायी जाती है। कुल मिलाकर दीपावली अब महज एक धार्मिक या सांस्कृतिक त्योहार भर नहीं बल्कि यह भारत की आर्थिक ताकत और आधुनिकता का सबसे सशक्त प्रतीक बन चुका है। *

देश का पावरफुल कल्चरल सुपर ब्रांड

आज के दौर में दीपावली आधुनिक भारत का सबसे पावरफुल सुपर ब्रांड बन चुकी है। हर सफल आधुनिक राष्ट्र के पास एक साझा भावनात्मक प्रतीक होता है। जैसे अमेरिका के पास थैंक्स गिविंग, चीन के पास स्प्रिंग फेस्टिवल, जापान के पास चेरी ब्लॉसम फेस्ट, उसी तरह भारत के पास दीपावली जैसा पर्व है। यह त्योहार भारत की सांस्कृतिक निरंतरता और आधुनिक आकांक्षाओं को भी बहुत करीब से व्यक्त करता है। दीपावली आज महज एक सालाना पर्व नहीं है बल्कि यह भारतीय संस्कृति की गहराई, हमारी तकनीकी उन्नति की चमक, व्यापार की मजबूती, उसकी सक्रियता और सामाजिक एकता की प्रतीक भी बन चुकी है यानी, दिवाली अब केवल धार्मिक नहीं बल्कि राष्ट्रीय सांस्कृतिक गतिविधि है, जो भारत को परंपरा से प्रगति तक जोड़ने वाला पुल बनाती है। दीपावली आज अखिल भारतीय आधुनिक संस्कृति की धुरी है। हर भारतीय समुदाय हिंदू, जैन, बौद्ध और सिख अपने-अपने अर्थों में इसे अपनी विरासत का जीवंत हिस्सा मानते हैं।

एक समय तक दीपावली के मौके पर परिवार, मित्रों, रिश्तेदारों के साथ खेल के तौर पर जुआ खेलने की परंपरा रही। लेकिन हाल के वर्षों में ऑनलाइन गेमिंग के जरिए गैंबलिंग की लत ने बड़ा सामाजिक-आर्थिक संकट खड़ा कर दिया है। इस बारे में अवेयर रहने की जरूरत है।

भारी नुकसान दे सकती है ऑनलाइन गेमिंग की लत

अवेयरनेस

एन.के. अरोड़ा

शगुन और परंपरा के नाम पर जिस तरह से हाल के सालों में लोगों द्वारा दीपावली के मौके पर ऑनलाइन जुए का ट्रेंड बढ़ा है, उसके कारण गैंबलिंग की लत दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। यह न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामाजिक चिंता का भी विषय है। परंपरा के नाम पर आजमाई जा रही इस खतरनाक आदत के कारण लोगों की जिंदगी ही आर्थिक संकट से घिर गई है।

परंपरा के नाम पर ऑनलाइन गेमिंग: यह मान्यता है कि दीपावली के अवसर पर जुआ खेलना शुभ होता है। इसलिए लोग परंपरा के नाम पर आमतौर पर दीपावली के मौके पर आपस में जुए की गतिविधियों पर हाथ आजमाते हैं। लेकिन कई बार इसके जरिए दीपावली जैसे रोशनी, मेलजोल और खुशियों के त्योहार को परेशानियों का सबब बना लेते हैं। नतीजतन रोशनी के इस त्योहार के ऐन मौके पर उनके घरों में परेशानियों का अंधेरा छा जाता है।

बुरा एडिक्शन है ऑनलाइन गेमिंग: दीपावली की रात ही नहीं ऑनलाइन गैंबलिंग ऐसा एडिक्शन बन गया है, जो सामान्य दिनों में भी लोगों की बर्बादी का कारण बन रहा है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि पुलिस भी इस बुराई पर चाहकर भी प्रभावी प्रतिबंध नहीं लगा पाती, क्योंकि यह सारी गतिविधि एक स्मार्टफोन की स्क्रीन या किसी डिजिटल एप्स तक सिमटकर रह गई है, जो एक क्लिक के साथ ही हमारी पकड़ से बहुत दूर जा चुकी होती है।

क्यों-कैसे फंस जाते हैं इस दुष्चक्र में: पहले जुआ खेलने के लिए ऐसी कोई खास सुरक्षित जगह ढूंढ़नी पड़ती थी, जहां तक पुलिस और समाज पर नैतिक दबाव बनाने वाले लोगों की पहुंच न हो या इन लोगों को यहां तक पहुंचने में मुश्किल हो। लेकिन आज की तारीख में ऑनलाइन गेमिंग या मोबाइल के स्क्रीन पर संपन्न होने वाला जुआ इतना आसान हो गया है कि हम जब चाहें और जहां से चाहें, इसे खेल सकते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि करोड़ों, अरबों के आर्थिक आधार वाली बड़ी-बड़ी कंपनियां इसके लिए हमें बोनस और विज्ञापन के जरिए ललचाती हैं। साथ ही लोगों को डिजिटल गतिविधियों के जरिए ललचाकर फंसाने वाली कंपनियां 'दिवाली ऑफर', 'लकी स्पिन', 'कैश बोनस', जैसी रसीली बातों से हमें फांसते हैं और देखते ही देखते हम इन पैसे चूसने वाली स्कीमों के चक्कर में फंस जाते हैं। बस एक जीत के जरिए जिंदगी को मालामाल करने की तमन्ना से हम अपने पास जो भी होता है, सब कुछ बड़ी आसानी से गंवा देते हैं और इस तरह धोखे-धोखे में लाखों, करोड़ों लोग ऑनलाइन गेमिंग में फैले गैंबलिंग के खेल से कंगाल हो जाते हैं।

गंवा देते हैं हजारों करोड़: हर साल लाखों लोगों की बर्बाद कहानियों के बावजूद, लोग इनसे सबक लेने की बजाय अगली बर्बाद कहानियों का हिस्सा बनने के लिए हर समय तैयार रहते हैं। एक अनुमान के मुताबिक पिछले पांच सालों से हर साल दीपावली के मौके पर अनुमानतः आम लोग 15 से 20 हजार करोड़ रुपए तक इस ऑनलाइन जुए में गंवा बैठते हैं, जो उनकी जिंदगीभर की गाढ़ी कमाई होती है। यही कारण है कि आजकल रोशनी के इस पर्व में हर साल लाखों लोगों की जिंदगी में हमेशा-हमेशा के लिए अंधकार भर जाता है।

कानूनी स्थिति: हालांकि पब्लिक गैंबलिंग एक्ट 1867 के तहत जुआ एक सार्वजनिक सामाजिक अपराध है। लेकिन दुर्भाग्य से हमारी हथेली में अटके मोबाइल की स्क्रीन पर धूम-धड़ाके से चलने वाली जुए की महफिलों पर कानून नहीं लागू होता था। हालांकि इस सबके बावजूद तेलंगाना, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश में ऑनलाइन गेमिंग के कई रूपों पर प्रतिबंध लगाया है, बावजूद इसके दिवाली की रात जुए के लिए बेकरार करोड़ों लोगों को यह आंशिक प्रतिबंध बर्बाद होने से नहीं बचा पाते। यही वजह है कि जोर-शोर से लाखों लोग ऑनलाइन गेमिंग पर हर तरह से प्रतिबंध लगाने की बात करते हैं। लेकिन आजादी और लोकतंत्र के नाम पर उतने ही लोग इसे रेगुलेट करने की वकालत करते हैं। यही कारण है कि हर साल लाखों लोगों के ऑनलाइन गेमिंग के जरिए बर्बाद हो जाने के बावजूद इस पर प्रतिबंध नहीं लग रहा। हालांकि 1 अक्टूबर से देश भर में ऑनलाइन गेमिंग विधेयक 2025 लागू हो गया है। इसमें रियल मनी गेमिंग संचालित करने वाली कुछ कंपनियों और एप्स पर बैन लगा दिया गया है। इसका प्रचार करने वालों पर भी कड़े दंड का प्रावधान है।

दूर रहने का लें संकल्प: दीपावली की रोशनी तभी हमारे लिए सार्थक होगी, जब वह हमारे परिवारजनों के चेहरों पर खुशियों का उजास फैलाए, न कि ऑनलाइन गेमिंग के जरिए बर्बादी का अंधेरा छाए। इसलिए इस साल ऑनलाइन गेमिंग से दूरी बनाने के लिए संकल्प लें। *

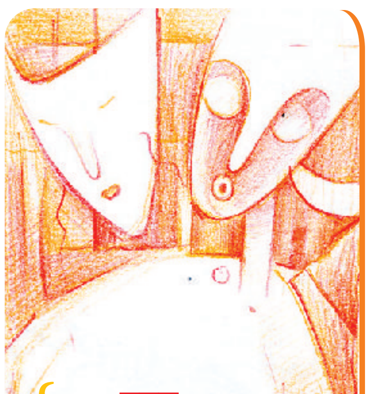

गजल

अब्दुल कलाम

मन के फेर हैं बाबा

इधर देखो जिधर देखो मचा अंधेर है बाबा
सलामत दिन निकल जाए तो समझो खैर है बाबा

कोई सूरत तो फिर निकले कि सच का बोल-बाला हो
मगर निकले भी कैसे झूठ इतना दिलेर है बाबा

आग की जद में शहर जो आ गया तो फिर
बचेगा कुछ नहीं हिजरत में फिर क्यों देर है बाबा

मिटाने हम चले हैं देश की फिरका परस्ती को
जहां पर खून के रिश्तों में देखे बैर है बाबा

यहां सर पे कफन हमने ही बांधा वक्त जब आया
वो कहते हैं कि हम उनके लिए अब गैर हैं बाबा

फाइलों में दब के रह जाती है अब फरियाद भी
कोर्ट-कचहरी न्याय सब मन के फेर हैं बाबा

लघुकथाएं

अनमोल लम्हे

'रिटायरमेंट के बाद निर्माण नगर में ही रहना विनीत। सभी दोस्त साथ में मस्ती करेंगे।' शैलेंद्र ने विनीत से कहा, जब वह किसी काम से निर्माण नगर आया हुआ था।

'हां! देखता हूं।' विनीत ने कहा। पर मन ही मन वह सोच रहा था कि क्या है इस शहर में? दिल्ली में जिस सोसाइटी में वह रहता है, वहां कितना अच्छा पार्क है, जिम है, स्विमिंग पूल है। हर अवसर पर कुछ न कुछ बढ़िया कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं। अच्छा जीवन कटेगा वहां। यही सब सोचकर रिटायरमेंट के बाद विनीत निर्माण नगर के बजाय दिल्ली में ही बस गया। सुबह मॉर्निंग वॉक, फिर जिम और उसके बाद स्विमिंग। बीच-बीच में सोसायटी की मीटिंग और अकसर तरह-तरह के कार्यक्रमों में शामिल होना। विनीत का यही रूटीन हो गया था। वह सोचने लगा कि जीवन का पूरा मजा वह ले रहा है।

कुछ समय बाद उसे किसी काम से फिर निर्माण नगर जाने का मौका मिला। तब तक उसके अधिकांश दोस्त रिटायर हो चुके थे। उसने देखा कि सुबह-सुबह कई दोस्त मॉर्निंग वॉक पर इकट्ठे होते हैं। फिर शुरू होती हैं बचपन की बातें और हंसी-ठहाके। कोई अपने टीचर के नकल उतारने वाली हरकत के बारे में बताता तो कोई एक-दूसरे के साथ की जाने वाली शैतानियों के किस्से सुनाता। और भी कई तरह-तरह की बातें वे सब आपस में करते हैं। इसी तरह शाम को भी सारे दोस्त इकट्ठे हो जाते और फिर शुरू हो जाता ठहाकों का दौर। दिल खोल कर हंसते थे सभी दोस्त। ऐसा लगता मानो फिर से वे बचपन की मस्ती का आनंद लेने लगे हों।

अपने दोस्तों के मस्ती भरे अंदाज को देखकर विनीत सोचने लगा वैसे तो दिल्ली में जीवनशैली और सुख-सुविधाएं यहां से बेहतर हैं, पर बचपन के दोस्तों के साथ यह मौज-मस्ती वहां नहीं मिल पाती है। विनीत ने मन ही मन खुद से कहा, 'सच में ये आनंद भरे पल अनमोल हैं।' *

-विनय कुमार पाठक

फॉलोवर्स

आदित्य ने सुबह नींद से जगते ही अपना इंस्टा अकाउंट चेक किया। 'बधाई हो! आपके फॉलोवर्स की संख्या एक लाख हो गई है।' मोबाइल पर नोटिफिकेशन था। आदित्य जोश में आ गया। मुट्ठियां बंद कर हाथों को झटकते हुए कहा, 'यस!' वह काफी दिनों से अपने इंस्टा अकाउंट पर फॉलोवर्स की संख्या बढ़ाने की कोशिश में लगा हुआ था। आदित्य मुंबई में रहता है। उसका टू बीएचके फ्लैट है। कुछ वर्ष पहले उसके मम्मी-पापा की एक दुर्घटना में मौत हो गई थी। वह उनकी अकेली संतान है। बस उसके दादाजी हैं, जो मुंबई से दूर एक गांव में रहते हैं। जब तक मम्मी -पापा रहे तब तक वह उनसे मिलने जाता था। उसके बाद वह कभी गांव नहीं गया। अभी वह अपना मोबाइल देख ही रहा था कि दरवाजे की घंटी बजी। उसने जाकर दरवाजा खोला। सामने एक बुजुर्ग आदमी थे।

'जी कहिए..।'

'तुम निशिकांत के पोते आदित्य हो?'

'जी, आप कौन?'

'मैं दयाल! निशिकांत ने मुझे भेजा है। उसकी तबीयत बहुत खराब है। शायद अब ज्यादा जीवित न रहे। मरने से पहले तुमको देखना चाहता है। मेरे साथ अभी गांव चलो।'

'अभी! एकदम से?'

'हां, नहीं तो शायद तुम अपने दादाजी को आखिरी बार भी ना देख सको।'

'देखिए, अभी मेरे पास बहुत सारे जरूरी काम पेंडिंग हैं। ऐसा करिए, आप जाकर उनसे कह दीजिएगा, मैं रविवार को आऊंगा। हां मेरा मोबाइल नंबर भी लेते जाइए। मुझे फोन पर दादाजी से बात करा दीजिएगा।'

दयाल निराश होकर वापस लौट गए। आदित्य चंद मिनटों तक दादाजी के बारे में सोचता रहा। जैसे ही उसे फॉलोअर्स का ख्याल आया वह उन्हें भूल गया। उसके हाथ तेजी से मोबाइल पर चलने लगे। अगले दिन सुबह-सुबह उसके पास फोन आया, 'तुम्हारे दादाजी नहीं रहे।' दयाल की ही आवाज थी।

'ओह! मैं आता हूं।' आदित्य ने कहा। उसने फौरन अपने बैग में दो जोड़ी कपड़े लिए और गांव के लिए रवाना हो गया। करीब पांच-छह घंटे का रास्ता था। मगर जिस ट्रेन में वह बैठा था, वह जगह-जगह रुक रही थी। छह घंटों में वह आधे रास्ते भी न पहुंच सका। अगले स्टेशन पर पहुंचकर वह ट्रेन से उतर गया और गांव जाने वाली बस पकड़ ली। मगर दुर्भाग्य कि बीच में सड़क धंसने से बस आगे न जा सकी। गांव अब भी तीस किलोमीटर दूर था। वह बाइक सवारों से लिफ्ट लेता हुआ किसी तरह गांव पहुंचा। तब तक काफी देर हो चुकी थी। सूरज ढल चुका था। अंधेरा हो रहा था। हर ओर सूनापन फैल रहा था। दादाजी के घर के दरवाजे पर कुछ महिलाएं खड़ी थीं। उसने उनसे दादाजी के बारे में पूछा।

'हमें लगा अब तुम नहीं आओगे। इसलिए गांव वाले उनको श्मशान घाट ले गए।' वह श्मशान घाट की ओर दौड़ा। उसके दादाजी का शव चार लोग अपने कंधे पर उठाए चले जा रहे थे। पीछे-पीछे ढेर सारे गांव वाले थे। वह वहीं ठिठक गया। उसे तो लगा था, उसके बिना दादाजी को भला कौन कंधा देगा। मगर यहां तो पूरा गांव है दादाजी के पीछे। गांव वालों ने चिता सजाई और दादाजी का शव अग्नि को समर्पित कर दिया। आदित्य भीड़ के पीछे ही ठिठका रहा, आगे नहीं आया। तभी उसके मोबाइल पर नोटिफिकेशन आया 'बधाई हो! आपके फॉलोवर्स की संख्या एक लाख दस हजार हो गई है।' *

-सरस्वती रमेश

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

जिंदगी@मगनपुर इस्टेट

वरिष्ठ कथाकार गोविंद उपाध्याय का तीसरा उपन्यास 'जिंदगी@मगनपुर इस्टेट' हाल में ही प्रकाशित होकर आया है। इस नॉस्टेल्जिक उपन्यास का मुख्य पात्र एक बुजुर्ग शख्स विमान भौमिक है, जो मगनपुर इस्टेट में बिताए अपनी किशोरावस्था के दिनों को याद करता है। लेकिन उसमें कहीं भी भावुकता का अतिरेक या पुराने दिनों के प्रति मोह की सांद्रता नजर नहीं आती है। वो खिलंदड़े अंदाज में बीती हुई घटनाओं को याद करता है। पिछली सदी के सातवें-आठवें दशक के बीच की पृष्ठभूमि पर रचा गया यह उपन्यास, उस दौर के मध्यवर्गीय परिवार के किशोरों की जीवनशैली, उनके सपने, उनकी बचकानी हरकतें और छोटी-छोटी खुशियों को भी बटोर लेने की उनकी ललक को बहुत रोचक तरीके से सामने लाता है। हालांकि इस उपन्यास का कथानक और उसमें उपस्थित सभी पात्र काल्पनिक हैं लेकिन जो भी लोग लेखक को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं, वो सहज ही इस उपन्यास के कथा-तंतुओं से वास्तविक छवि को बुन सकते हैं। लेखक के किस्सागोई के अंदाज में पाठक को बांधे रखने का जादुई सामर्थ्य है। *

पुस्तकः जिंदगी@मगनपुर इस्टेट (उपन्यास)
लेखकः गोविंद उपाध्याय, **मूल्यः** 299 रुपए,
प्रकाशकः सर्वभाषा ट्रस्ट, दिल्ली

अमेजिंग स्पॉट्स / रजनी अरोड़ा

इन दिनों फेस्टिवल सीजन चल रहा है। आपके घर के आस-पास और बड़ी मार्केट्स में खूब रौनक और भीड़-भाड़ दिख रही होगी। बाजार ऐसा स्थान होता है, जहां से हम सभी अपनी जरूरत का हर सामान खरीद सकते हैं। लेकिन दुनिया में कुछ ऐसे भी बाजार हैं, जो अपनी खूबसूरती, भव्यता, अद्भुत सामानों की बिक्री और अनोखेपन के कारण बहुत मशहूर हैं। ऐसे ही कुछ अनोखे बाजारों और उनकी विशेषताओं पर एक नजर।

ये हैं दुनिया के कुछ अनोखे-प्रसिद्ध बाजार

डम्नोएन सडुआक फ्लोटिंग मार्केट

यह अनोखा बाजार थाईलैंड में बैंकॉक से लगभग 100 किमी. दक्षिण-पश्चिम में राजबुरी इलाके में लगता है। डम्नोएन मार्केट थाईलैंड के सबसे मशहूर और बड़े तैरते हुए बाजारों में से एक है। इस

बाजार का निर्माण 19वीं सदी के अंत में तत्कालीन राजा रामचतुर्थ के आदेश पर हुआ था। जिसका उद्देश्य माइकलोंग और थाची नामक नदियों को आपस में जोड़ना और उनके माध्यम से व्यापार को सुगम बनाना था। आज यह बाजार सदियों पुरानी थाई परंपरा को दर्शाता है। यहां महिला विक्रेता ज्यादा हैं, जो पारंपरिक कपड़े पहनकर लकड़ी की छोटी नावों पर सामान बेचती हैं। इनमें फल, सब्जियां, ताजा पका हुआ स्ट्रीट फूड, स्थानीय उत्पादों के साथ-साथ हस्तशिल्प का सामान होता है। यह बाजार सुबह सात से नौ बजे तक सबसे अधिक व्यस्त रहता है। इच्छुक खरीदार ही नहीं, इस अनोखी फ्लोटिंग मार्केट में घूमने और इसे देखने के लिए बड़ी संख्या में पर्यटक भी नाव से आते हैं।

ईमा कीथेल मार्केट

यह अनोखा बाजार भारत के पूर्वोत्तर राज्य मणिपुर की राजधानी इंफाल में लगता है। यह बाजार लगभग 500 वर्ष पुराना है और एशिया के सबसे बड़े बाजारों में गिना जाता है। ईमा केथेल बाजार की नींव 16वीं शताब्दी में लल्लुप काबा के विरोधस्वरूप हुई मानी जाती है। उस समय पुरुषों को जबरन बंधुवा मजदूर बनाने और दूरदराज के क्षेत्रों में काम करने के लिए भेजने की प्रथा थी। जिसके चलते महिलाओं को घर की आर्थिक जिम्मेदारी संभालने की जिम्मेदारी उठानी पड़ी। उन्हें खेती, विभिन्न खाद्य पदार्थ, घरेलू सामान, परंपरागत सिलाई-बुनाई, हस्तकला निर्मित वस्तुओं का निर्माण, मछली पकड़ने जैसे कार्य करके अपने उत्पाद बेचने पड़े। तभी यह बाजार अस्तित्व में आया।

आज ईमा कीथेल मार्केट दुनिया में एकमात्र ऐसा बाजार है, जो पूरी तरह से महिला विक्रेताओं तकरीबन (6000) द्वारा संचालित किया जाता है। ईमा कीथेल नाम का मणिपुरी भाषा में अर्थ मां का बाजार है, जिसमें प्रायः सभी दुकानदारों को ईमा या मां कह कर संबोधित किया जाता है। यह मुख्यतया तीन खंडों में बंटा हुआ है। जहां घरेलू सामान, फल-सब्जियां, मसाले, विभिन्न प्रकार के जलीय जीव, मणिपुरी पारंपरिक वस्त्र और बुनाई के उत्पाद मिलते हैं। यह केवल एक व्यापारिक केंद्र नहीं, बल्कि मणिपुर की महिलाओं की आत्मनिर्भरता, सशक्तिकरण, गौरव और सामाजिक-आर्थिक महत्व का एक जीवंत प्रतीक है।

मेकलॉन्ग रेलवे मार्केट

थाईलैंड के सामुन सोंग खराम प्रांत में लगने वाली मेकलॉन्ग रेलवे मार्केट को स्थानीय भाषा में तलात रोखूप या फोल्डिंग अंब्रेला मार्केट भी कहा जाता है। यह दुनिया के सबसे अनूठे और रिस्की बाजारों में से एक है। यह बाजार अपनी बिक्री वाले सामान के लिए नहीं, बल्कि एक्टिव रेलवे ट्रैक के किनारे बने होने और भारी आवाजाही के कारण मशहूर है। यानी, बाजार के दुकानदार ही नहीं, खरीदार भी रेलवे ट्रैक पर सामान खरीदते-बेचते हैं। यहां ताजे फल, सब्जियां, समुद्री भोजन और अन्य घरेलू सामान मिलता है। इस बाजार का सबसे बड़ा आकर्षण और अनोखापन है ट्रेन का बाजार के बीचों-बीच दिन में आठ बार गुजरना। जैसे ही ट्रेन के आने का हॉर्न बजता है, सभी दुकानदार रेलवे ट्रैक तक पहुंचने वाले अपनी-अपनी दुकान के तिरपाल, छतरियां और सामान तुरंत हटा लेते हैं। रेलवे ट्रैक पर बेखौफ चलने वाले खरीदार भी रास्ता देकर ट्रेन के गुजरने का इंतजार करते हैं। ट्रेन के चले जाने पर बिना देर किए दुकानें फिर सजा लेते हैं और कुछ पलों के लिए थमे बाजार की रौनक दुबारा शुरू हो जाती है। यह अनूठी दिनचर्या जहां स्थानीय वाणिज्य और रेल परिवहन के बीच तालमेल का एक शानदार उदाहरण है, वहीं यहां आने वाले पर्यटकों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव होता है।

ग्रैंड बाजार

तुर्की देश के इस्तांबुल शहर में स्थित ग्रैंड बाजार को तुर्की भाषा में कापाली चार्शी कहा जाता है। इसका निर्माण 1455 में ऑटोमन साम्राज्य के सुल्तान मेहमेद द्वितीय के आदेश पर शुरू हुआ था। अपनी जटिल वास्तुकला, गुंबददार छत और ऐतिहासिक भव्यता के कारण यह बाजार सिर्फ

एक शॉपिंग डेस्टिनेशन नहीं है। बल्कि तुर्की की संस्कृति, इतिहास और एशिया-यूरोप के मध्य में एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र के रूप में इस्तांबुल की भूमिका को दर्शाता, जीता-जागता संग्रहालय भी कहा जा सकता है। आज ग्रैंड बाजार दुनिया के सबसे बड़े और सबसे खूबसूरत बाजारों में से एक है। इसमें 61 से अधिक कवर किए गलियारे और 4000 से अधिक दुकानें हैं। सदियों से व्यापार और वाणिज्य का केंद्र रहे ग्रैंड बाजार में लाखों पर्यटक और खरीदार रोजाना पहुंचते हैं। हस्तनिर्मित टर्किश कालीन, रंगीन सेरेमिक की वस्तुएं, सोने-चांदी के आभूषण, चमड़े के सामान के साथ विभिन्न प्रकार के मसाले, आकर्षण का केंद्र हैं। खरीदारी के लिए मोल-भाव करने का प्रचलन भी यहां है, जो आगुंतकों के खरीदारी के अनुभव को अधिक रोमांचक बना देता है। *

डल झील बाजार

भारत के केंद्र शासित प्रदेश कश्मीर की डल झील पर लगता है यह तैरता हुआ डल झील सब्जी बाजार। डल झील के बीच पानी में थोड़े समय के लिए लगने वाला बाजार कश्मीर घाटी की संस्कृति और सुंदरता का अद्भुत प्रतीक माना जाता है। यह भारत का इकलौता और दुनिया के चुनिंदा अनोखे बाजारों में एक है, जो पानी के ऊपर लगते हैं। इस बाजार का नजारा डल झील की शांत नीली पृष्ठभूमि और पहाड़ों की छाया के बीच कश्मीरी जीवनशैली और प्राकृतिक संसाधनों के साथ निवासियों के गहरे जुड़ाव को भी दर्शाता है। डल झील बाजार में रोजाना सुबह पांच से सात बजे तक चहल-पहल बनी रहती है। यानी इस बाजार से यदि किसी को सब्जियां खरीदनी हैं, तो उसे सुबह जल्द ही आना पड़ेगा। स्थानीय विक्रेता लोग शिकारा नाव पर सवार होकर इस बाजार में खुद उगाई सब्जियां लेकर बिक्री के लिए आते हैं। वहीं खरीदार भी अपने शिकारा पर सवार होकर आते हैं और चलते हुए एक नाव से दूसरी नाव पर खरीद-फरोख्त करते हैं।

यूनीक पेंटिंग / मनीष कुमार चौधरी

सदियों पहले इटेलियन पेंटर लियोनार्डो दा विंची द्वारा बनाई गई अद्वितीय पेंटिंग मोनालिसा का आकर्षण अब भी बरकरार है। इस यूनीक पेंटिंग से जुड़े कुछ रोचक तथ्यों पर एक नजर।

मोनालिसा की रहस्यमयी मुस्कान

लियोनार्डो दा विंची की प्रसिद्ध पेंटिंग मोनालिसा ने कल्पना को जितना मोहित किया है, उतना शायद ही किसी कलाकृति ने किया हो। उनके इस चित्र का रहस्य और आकर्षण 30 इंच X 20 इंच के साधारण फ्रेम से कहीं आगे तक फैला हुआ है। ये किताबों, फिल्मों, गीतों और यहां तक कि एक कला चोरी का विषय भी है। समय के साथ पेंटिंग का वार्निश भले ही धुंधला और पीला पड़ गया हो, लेकिन उनकी भावपूर्ण मुस्कान और रहस्यमयी निगाहें अभी भी चमकती हैं।

कौन थी असली मोनालिसा: हालांकि मोनालिसा की पहचान को लेकर कुछ मतभेद हैं। लेकिन ज्यादातर विद्वानों और कला इतिहासकारों का मानना है कि यह चित्र फ्रांसीसी संभ्रांत महिला लिसा डेल जियोकोंडो का है, जो एक धनी रेशम व्यापारी फ्रांसेस्को डेल जियोकोंडो की पत्नी थी। लिसा का जन्म 1479 में हुआ था और उन्होंने 15 साल की उम्र में फ्रांसेस्को से शादी की थी। वह बहुत सुंदर और आकर्षक थीं। लियोनार्डो ने 1503 में मोनालिसा को चित्रित करना शुरू किया और 1517 तक इस पर काम किया। हालांकि यह पेंटिंग डेल जियोकोंडो के घर में कभी नहीं सजी। लेकिन दुनिया भर में बहुत प्रसिद्ध हुई।

स्फुमाटो तकनीक का इस्तेमाल: इस चित्र को बनाने में लियोनार्डो ने अपनी विशिष्ट स्फुमाटो तकनीक का इस्तेमाल किया, जिसमें किसी व्यक्ति के फेस पेंटिंग में होंठों और आंखों के किनारों को सूक्ष्म रूप से धुंधला करके धुएं जैसा रहस्यमयी प्रभाव पैदा किया जाता है। इस प्रभाव से चित्र की आंखें विभिन्न भागों पर घूमती दिखती हैं, मुस्कुराहट बदलती हुई प्रतीत होती है। इस चित्र में ऐसे भाव प्रकट होते हैं, जिसको देखकर यह पक्के तौर पर नहीं कह सकते कि वह खुश है या उदास। वह मुस्कुरा रही है या नहीं। रहस्य का यही स्पर्श पेंटिंग के आकर्षण में इजाफा करता है और दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर देता है।

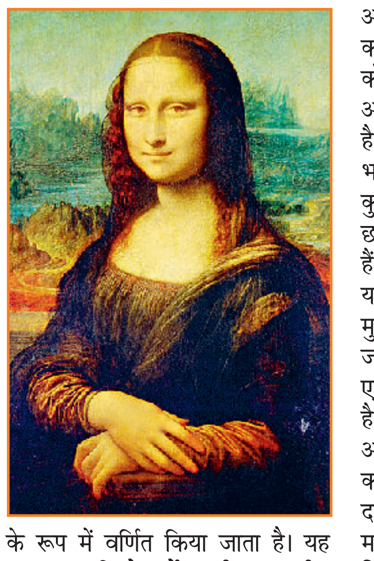

रहस्यात्मक मुस्कान: मोनालिसा की मुस्कान एक सीधी-सादी, हर्षित मुस्कान नहीं है। इसे अकसर उदासी, गंभीरता या किसी रहस्य का संकेत देने वाली मुस्कान के रूप में वर्णित किया जाता है। यह मुस्कान लियोनार्डो की मानवीय अभिव्यक्ति और भावनाओं की बारीकियों को पकड़ने की असाधारण क्षमता को भी दर्शाती है। इस मुस्कान का पेंटिंग आर्ट पर अमिट प्रभाव रहा है, जिसने अनगिनत कलाकारों, लेखकों और फिल्म निर्माताओं को इसकी गहराई का पता लगाने और अपनी व्याख्याएं रचने के लिए प्रेरित किया है। इस पेंटिंग को अब तक की सबसे महान भावनात्मक पेंटिंग तक बताया गया है। कुछ इसे परंपरा से परे, परिभाषा से परे, छवि से परे सत्य की तलाश करते हुए पाते हैं। 'तुम्हारी मुस्कान मोनालिसा जैसी है।' यह कहने का मतलब है-रहस्य। यानी कोई मुस्कान रहस्य और जिज्ञासा से कैसे जुड़ जाती है, मोनालिसा की मुस्कान इसका एक सशक्त उदाहरण है। ऐसा माना जाता है कि मोनालिसा द्वारा अपनी मुस्कान में अपनी खुशी को पूरी तरह से व्यक्त न करने का कारण उनके पिछले नुकसान का दर्द था। यह सिद्धांत कई शोक संतप्त महिलाओं के साथ प्रतिध्वनित होता है।

लियोनार्डो की कलात्मकता का कमाल: लियोनार्डो ने चीजों को गहराई से देखने की अपनी क्षमता और अध्ययनों को अपनी कला में भी शामिल किया। मानव शरीर रचना विज्ञान के बारे में लियोनार्डो की अंतर्दृष्टि और गहरी समझ, उनकी उत्कृष्ट कृतियों को अमूल्य बनाती है। एक अध्ययन के अनुसार, मोनालिसा के मुंह की मूल तस्वीर 97 प्रतिशत बार 'खुशी' के रूप में देखी गई। यह शोध इस बात के पुख्ता सबूत देता है कि मुस्कान वास्तव में खुशी का चित्रण है। मुस्कान के विभिन्न तत्वों का विश्लेषण और पुनर्निर्माण करके वैज्ञानिकों को इस बात की गहरी समझ मिली कि लियोनार्डो दा विंची अपनी कलात्मकता के माध्यम से दर्शकों की भावनाओं को कैसे प्रभावित करते थे।

चोरी भी हो चुकी पेंटिंग: लियोनार्डो अपनी इस पेंटिंग को 14 साल तक अपने साथ रखे रहे। उनके प्रशंसक कलाकारों और छात्रों ने उनके जीवनकाल में ही इस कलाकृति की प्रतियां बनाना शुरू कर दिया था। यह चित्र अंततः लियोनार्डो के अंतिम संरक्षक फ्रांस के राजा फ्रांसिस प्रथम के संग्रह में शामिल हो गया। लेकिन 21 अगस्त 1911 को यह पेंटिंग चोरी हो गई। अगले दो सालों तक उसकी चोरी की कहानी एक सांस्कृतिक सनसनी बनी रही। वर्ष 1913 में विंसेंजो पेरुगिया नामक व्यक्ति पकड़ा गया, जिसने इसे चुराया था। इस तरह मोनालिसा वापस अपने फ्रेम में पहुंच गई। *

अपने देश में विभिन्न आकार और आकृतियों के बेशुमार मंदिर स्थित हैं। इन्हीं में से एक कछुए की आकृति वाला अनूठा मंदिर महाराष्ट्र के कोल्हापुर में स्थित है। इस मंदिर की विशेषताओं और इससे जुड़ी निर्माण कथा के बारे में जानिए।

कछुए की आकृति वाला अजब-अनूठा मंदिर

रोचक / अशोक वाधवाणी

अपने भारत देश में बहुत सारे ऐसे अद्भुत, अनूठे मंदिर हैं, जिन्हें देखने वाला मंत्रमुग्ध होकर निहारता रह जाता है। इनकी स्थापत्य कला का नायाब नमूना हर किसी को अचरज से भर देता है। कुछ की संरचना इतनी भव्य और अनूठी है कि उसे देखने दुनिया भर से लोग आते हैं। कुछेक मंदिर तो ऐसे हैं, जो आकार में छोटे हैं, लेकिन उनमें लोगों को आकर्षित करने की भरपूर क्षमता है। ऐसा ही एक अनोखा मंदिर पश्चिम

अपने अनोखे स्ट्रक्चर के कारण प्रसिद्ध है यह मंदिर

महाराष्ट्र के कोल्हापुर जिले के पैजार वाडी नामक छोटे से स्थान में स्थित है, जो कि पन्हाला हिल स्टेशन के निकट है। कोल्हापुर-रत्नागिरी रोड पर, कोल्हापुर से महज 25 किमी. की दूरी पर बने इस मंदिर की विशेषता है, इसका कछुए की अनोखी आकृति का होना। कछुआ आकृति वाला दूसरा कोई मंदिर पूरे महाराष्ट्र में और कहीं नहीं है।

निर्माण से जुड़ी मान्यता: इस मंदिर के निर्माण से जुड़ी मान्यता के अनुसार एक समय में यहां पर श्रीदत्त चिले महाराज के नाम से एक प्रसिद्ध संत हुआ करते थे। वे अपने अनुयायियों के साथ अलग-अलग जगहों का भ्रमण किया करते थे। कोल्हापुर शहर के आस-पास की जगहों जैसे- टेंबलाई, नृहिंहवाड़ी, कोकण क्षेत्र में जोंध मारुति आदि के अलावा पंढ़रपुर जैसी धार्मिक जगहों पर वे अकसर जाते रहते थे। वे जहां भी जाते थे, उस इलाके में रहने वाले कछुओं को अवश्य याद करते थे। किसी स्थान पर पहुंचकर वे जब अपने अनुयायियों से कहते कि कछुआ यहीं-कहीं होना चाहिए, तो उनके शिष्यों की भाग-दौड़ शुरू हो जाती। उन शिष्यों के अचरज का ठिकाना नहीं रहता, जब गुरुदेव के कहे स्थान पर कछुए का दर्शन हो जाता था। श्रीदत्त महाराज का कछुए के प्रति इतना लगाव-जुड़ाव क्यों था? इसकी सही-सही जानकारी नहीं मिली। लेकिन उनके अनुयायी और शिष्य मानते थे कि महाराज जहां कह देंगे, वहां कछुआ जरूर दिख जाता था। वर्ष 1986 में उनके देह त्यागने के बाद उनकी समाधि बनाई गई। मंदिर ट्रस्ट के सारे सदस्यों ने योजना बनाई कि चिले महाराज का कछुए के प्रति आकर्षण को ध्यान में रखकर कछुए की आकृति वाला मंदिर बनवाया जाएगा।

मंदिर की संरचना-विशेषता: कुल 5000 स्क्वायर फीट एरिया में बने इस मंदिर की ऊंचाई 51 फुट, लंबाई 60 फुट और चौड़ाई 80 फुट है। इसकी विशेषता यह है कि मंदिर के निर्माण में किसी भी खंबे का सहारा नहीं लिया गया है। इसकी खूबियों, खासियतों को ध्यान में रखकर ही एक अमेरिकन संस्था ने इसे वर्ष 2005 'आउटस्टैंडिंग स्ट्रक्चर ऑफ द ईयर' के पुरस्कार से सम्मानित किया है।

ऐसे किया गया निर्माण: इस मंदिर की योजना को मूर्त रूप देने के लिए पुंडलिक राव इंगले ने विशेष प्रयास किए थे। इसे बनाने के लिए समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर आर्किटेक्ट्स द्वारा डिजाइनें मंगाई गईं। आखिरकार 15 में से एक आर्किटेक्ट प्रमोद बेरी की डिजाइन का चयन किया गया। इस तरह मंदिर का निर्माण पूरा किया गया। इस मंदिर के अंदर ही चिले महाराज की प्रतिमा स्थापित की गई है, जो श्रद्धालुगणों की आस्था का केंद्र है।

लगता है श्रद्धालुओं का जमघट: ट्रस्ट के वर्तमान अध्यक्ष बाबा साहब चव्हाण के अनुसार देश के कोने-कोने से श्रद्धालुओं का तांता, दर्शन करने के लिए इस मंदिर में लगा रहता है। कई विशेष धार्मिक अवसरों जैसे- श्रीदत्त जयंती, चिले महाराज जी की जन्मतिथि, पुण्यतिथि, हर माह की अमावस्या, गुरु पूर्णिमा, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आदि धार्मिक-आध्यात्मिक-सामाजिक अवसरों पर कई कार्यक्रमों का यहां आयोजन किया जाता है। *

जो फिल्में कॉमर्शियली सक्सेसफुल हैं, जरूरी नहीं कि वे कालजयी फिल्में भी हों। ऐसे ही यह भी जरूरी नहीं कि सदाबहार कालजयी फिल्मों का बॉक्स-ऑफिस रिकॉर्ड भी अच्छा रहा हो। बॉलीवुड की कुछ क्लासिक और कॉमर्शियली सक्सेसफुल फिल्मों के फंडे पर एक नजर।

ब्लॉकबस्टर सुपरहिट फिल्म 'शोले'

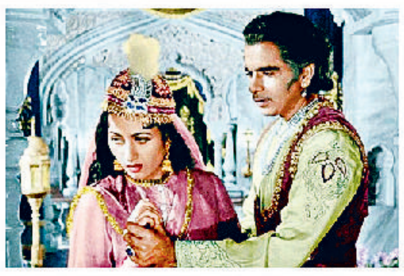

कल्ट क्लासिक फिल्म 'मुगल-ए-आजम'

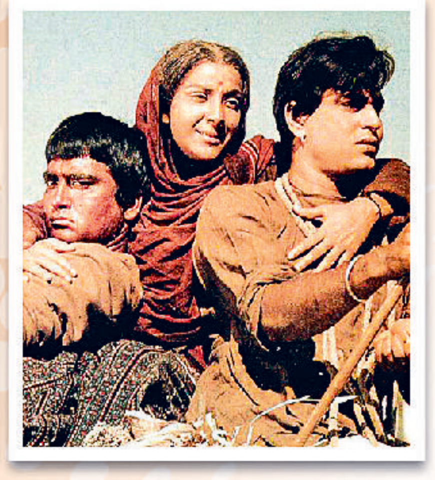

कालजयी फिल्मों में शामिल है 'मदर इंडिया'

बॉलीवुड की क्लासिक फिल्में वर्सेस कॉमर्शियली हिट फिल्में

सिल्वर स्क्रीन / हेमंत पाल

कालजयी फिल्में वे होती हैं, जिनमें कलात्मक उत्कृष्टता हो। वे सिर्फ दर्शकों का मनोरंजन ही नहीं करतीं, ये फिल्में ऐसे विषयों से जुड़ी होती हैं, जो मानवीय जीवन और अनुभव के विभिन्न पहलुओं को सामने लाने का माध्यम बनती हैं। इनकी प्रासंगिकता तात्कालिक नहीं होती। ये फिल्में दशकों बाद भी दर्शकों से जुड़ने में सक्षम रहती हैं। हालांकि बॉक्स ऑफिस पर फिल्मों की कारोबारी सफलता भी बहुत मायने रखती है, पर सबसे बड़ी सफलता है किसी फिल्म का कालजयी होना।

कॉस्टिंग-इनकम-सक्सेस का फंडा: यह बात सच है कि किसी भी फिल्म के बॉक्स ऑफिस कलेक्शन या फिल्म से इनकम के आधार पर उसे हिट या फ्लॉप का तमगा दे दिया जाता है। फिल्म की कमाई का सीधा सा अर्थशास्त्र यह है कि फिल्म अपनी कुल लागत से ज्यादा कारोबार करे। जो फिल्म जितना अधिक बिजनेस करती है, उस हिसाब से उसकी सफलता का आकलन किया जाता है।

बॉक्स ऑफिस पर सक्सेस फैक्टर्स: बॉक्स ऑफिस पर फिल्मों की सक्सेस के अनेक फैक्टर्स होते हैं। आज के दौर में फिल्में अकसर जबर्दस्त एडवर्टाइजमेंट के साथ रिलीज होती हैं, जो तत्काल टिकट-बिक्री को बढ़ाती हैं। उनकी मार्केटिंग और प्रचार का भी मैजिकल अट्रैक्शन पैदा किया जाता है। यही दर्शकों को आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि यह फंडा हर फिल्म के लिए सफल नहीं होता, इसलिए क्योंकि ये इफेक्ट टेंपरेरी हो सकते हैं, जो ऑडियंस को एक बार थिएटर तक खींच सकते हैं, लेकिन अगर फिल्म कंटेंट में दम नहीं है तो कुछ ही समय में सारा प्रचार का जादू फेल भी हो जाता है।

क्लासिक फिल्मों की खासियत: सवाल यह भी है कि अधिक निर्माण लागत और अच्छी-खासी कमाई वाली सभी फिल्में क्या लंबे समय तक दर्शकों को याद रह पाती हैं? इसका जवाब है, शायद नहीं, क्योंकि फिल्में महंगी निर्माण लागत या कमाई से नहीं, बल्कि अपने कथानक, निर्देशन और कलाकारों के अभिनय से याद रखी जाती हैं। बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में भी आईं, जिसने व्यावसायिक रूप से बड़ी सफलता पाई, लेकिन उन फिल्मों की कहानी या कलात्मकता ऐसी नहीं थी कि उन्हें समय के साथ याद रखा जाए। वहीं कुछ फिल्में कम बजट में बनीं, कम चलीं, लेकिन कालजयी हुईं। करोड़ों का कारोबार करने वाली सभी सुपरहिट फिल्में कालजयी इसलिए नहीं बन पातीं क्योंकि बॉक्स ऑफिस पर सफलता व्यावसायिक पहलुओं जैसे मार्केटिंग, प्रचार और दर्शकों की तात्कालिक पसंद पर निर्भर होती है। जबकि कालजयी फिल्में समय की कसौटी पर खरी उतरने वाली कला, गहराई और स्थाई सामाजिक प्रासंगिकता से जन्म लेती हैं। बॉक्स ऑफिस पर किसी फिल्म का हिट होना, अकसर एक विशिष्ट समय की प्रवृत्ति होती है, जो समय के साथ धुंधली हो सकती है। लेकिन कालजयी फिल्में मानवीय भावनाओं, विचारों और सामाजिक बदलावों को पकड़ती हैं, जो उन्हें पीढ़ी दर पीढ़ी प्रासंगिक बनाती हैं।

बहुत कम बनती हैं कालजयी फिल्में: सौ सालों से ज्यादा लंबे भारतीय फिल्म इतिहास में आज भी ऐसी फिल्में अंगुली पर गिनी जा सकती हैं, जो हर दौर में पसंद की जाती रही हैं। 'कालजयी' का मतलब है, समय के साथ अपनी प्रासंगिकता और महत्व को बनाए रखना। कालजयी फिल्में समय काल के सामाजिक रुझानों, तकनीकी नवाचारों या विशिष्ट जनसांख्यिकी को पूरा करती हैं, जो समय के साथ बदल भी सकती हैं।

कॉमर्शियली फ्लॉप पर क्लासिक 'मेरा नाम जोकर'

कालजयी फिल्मों के जरूरी तत्व: अगर फिल्मों को कालजयी बनाने वाले तत्वों की बात की जाए, तो उनमें कलात्मक गुणवत्ता बेहद जरूरी है। कई व्यावसायिक फिल्में तकनीकी या कलात्मक गहराई की कमी दिखाती हैं। प्रासंगिकता के नजरिए से कहा जाए, तो कालजयी फिल्में सार्वभौमिक विषयों जैसे प्यार, न्याय या मानवीयता की नैतिक दुविधाओं को उजागर करती हैं, जो किसी भी समय में दर्शकों के साथ जुड़ जाती हैं। ऐसी फिल्में जो समाज में गहराई से जुड़ती हैं, महत्वपूर्ण सामाजिक बदलावों को प्रेरित करती हैं या मानवीय अनुभव की नई व्याख्या प्रस्तुत करती हैं। ऐसी कई फिल्में हैं, जिन्होंने बॉक्स ऑफिस पर करोड़ों कमाए, लेकिन कुछ सालों बाद उन्हें भुला दिया गया है, क्योंकि वे किसी विशेष समय की उपज थीं। दूसरी और ऐसी फिल्में भी हैं, जिन्होंने रिलीज के समय बड़ी कमाई नहीं की, लेकिन अपनी कलात्मक गुणवत्ता, कहानी और स्थायी विषयों वाले कथानक की वजह से आज भी याद की जाती हैं और देखी जाती हैं।

कुछ कालजयी हिंदी फिल्में: बॉलीवुड की कुछ फिल्में ऐसी हैं, जो अपने रिलीज के दशकों बाद भी अपना एक अलग मुकाम रखती हैं। इन फिल्मों को हर दौर में हर पीढ़ी के दर्शकों का प्यार मिला। 'कागज के फूल', 'मदर इंडिया', 'मुगल-ए-आजम', 'बॉबी', 'शोले', 'दीवार', 'उमराव जान' जैसी फिल्मों को आज भी दर्शक याद करते हैं। इन फिल्मों की गिनती बॉलीवुड के क्लासिक कल्ट के रूप में होती है। खास बात यह है कि इन फिल्मों ने व्यावसायिक रूप से भी सफलता के झंडे गाड़े थे।

कई फिल्में अपने समय में व्यावसायिक रूप से अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकीं, लेकिन बाद में उन्हीं फिल्मों को बॉलीवुड की कल्ट क्लासिक का दर्जा मिला। उदाहरण के तौर पे 'मेरा नाम जोकर' और 'सिलसिला' जैसी फिल्मों को देखा जा सकता है।

ये वे फिल्में हैं, जो सिर्फ मनोरंजन ही नहीं करतीं, बल्कि मानवीय भावनाओं, सामाजिक मुद्दों और मानवीय रिश्तों की गहरी समझ को भी प्रस्तुत करती हैं, जिससे वे हमेशा के लिए कालातीत बन जाती हैं। *